सत्र - 2021–22
कक्षा - पाँचवीं
विषय - सूची

प्रथम सत्र

			पृष्ठ संख्या
अप्रैल-मई		ये पल जाते यहीं ठहर (कविता)	3
		अद्भुत प्रतिभा (पाठ)	6
	व्याकरण	भाषा, लिपि और व्याकरण	9
		वर्ण विचार	12
		हिंदी के अंक	16
		बाघ से टक्कर (अपठित गद्यांश)	17
		खत्म न होने वाली कहानी (अपठित गद्यांश)	19
जुलाई		कला का सम्मान (पाठ)	21
	व्याकरण	संज्ञा	24
		लिंग	28
		वचन	31
		औपचारिक पत्र	33
अगस्त/सितंबर		हमारे बदलते गाँव (पाठ)	36
		सूरज का गोला (कविता)	38
	व्याकरण	कारक	41
		विशेषण	43
		अनुच्छेद–लेखन	47
		कहानी – लेखन	50

द्वितीय सत्र

अक्तूबर		सुबह (पाठ)	54
	व्याकरण	सर्वनाम	57
		विराम–चिह्न	60
नवंबर		मेला (पाठ)	62
	व्याकरण	क्रिया	65
		काल	69
		बरतनों की मौत (अपठित गद्यांश)	72
		लालची किसान (अपठित गद्यांश)	74
दिसंबर		दोहे (कविता)	78
	व्याकरण	क्रिया विशेषण	81
		उपसर्ग	83
		प्रत्यय	87
		कहानी–लेखन	90
जनवरी		दो माताएँ (पाठ)	94
	व्याकरण	अशुद्धि–शोधन	97
		पत्र–लेखन	101
फरवरी		समय बहुत मूल्यवान (कविता)	103
	व्याकरण	विलोम	108
		मुहावरे	111
		पर्यायवाची शब्द	115
		चित्र–वर्णन	117
		संवाद–लेखन	119
		विज्ञापन–लेखन	122
		आशुभाषण	123
		शिक्षाप्रद कथा–संग्रह	124

अप्रैल

ये पल जाते यहीं ठहर (पठित काव्यांश)

प्रश्न–1 काव्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

कभी पतंग लूटने को
हुड़दंगी दौड़ लगाना,
आँधी में लुक–छिपकर
बगिया से आम चुराना
मगर लकड़सुंघवा का डर
भरमाते क्षण, यहीं ठहर।
कभी रूठना, टॉफ़ी–बिस्कुट
की खातिर रिरियाना,
माँ की मीठी डाँटें सुनना
और कभी गुस्साना
लगे दूध ज्यों रखा ज़हर
नखरीले क्षण, यहीं ठहर!

जान–बूझकर भीग–भीग
बारिश में खूब नहाना,
इधर उछलना, उधर फिसलना
बस्ता ले गिर जाना
बरसे मेघा छहर–छहर
बरसाती दिन, यहीं ठहर!
ताल–तलैया में कागज़ की
नैया का तैराना
कुत्ते, बिल्ली, बछड़ों को
ललकार, खूब दौड़ाना
मेंढक बन करते टर्र–टर्र
रट्टू मनवा, यहीं ठहर!

कवि – श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी

क) कविता के कवि का नाम बताइए। कविता में कवि किन दिनों की बात कर रहा है?

.....

.....

ख) बचपन में कवि किस बात पर रूठता था?

.....

.....

ग) कटी पतंग के पीछे कवि किस तरह भागता था?

.....

.....

घ) गद्यांश से चुनकर समानार्थक शब्द ढूँढ़िए :

(i) वर्षा .....

(ii) पल .....

प्रश्न–2 शब्द - अर्थ :-

(i) नैया – ..... (ii) नखरीला – .....

(iii) पर्वत– ..... (iv) अनगिन – .....

(v) बगिया– ..... (vi) थम जा – .....

(vii) बछड़ा– ..... (viii) ललकार – .....

प्रश्न–3 वाक्य बनाइए :-

i) बारिश–.....

.....

ii) किस्से–.....

.....

iii) गौरैया–.....

.....

iv) परीलोक–.....

.....

प्रश्न–4 आपको बारिश के मौसम में क्या करने में सबसे अधिक आनंद आता है?(4–5 पंक्तियों में लिखिए)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

मई

अद्‌भुत प्रतिभा (पठित गद्‌यांश)

प्रश्न–1 गद्‌यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

एक दिन रोशनी ने समाचार–पत्र में चित्रकला प्रतियोगिता के बारे में पढ़ा। चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन एक प्रसिद्‌ध संस्था 'कला एवं संस्कृति' द्‌वारा किया जा रहा था। 'कला एवं संस्कृति' नामक संस्था समय–समय पर लोगों की प्रतिभा उभारने के लिए ऐसी प्रतियोगिताएँ आयोजित करती रहती थी। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से विजेताओं को देशभर में पहचान मिलती थी और उनकी कला को ऊँचाइयों पर पहुँचने के रास्ते मिल जाते थे। चित्र का विषय 'प्रदूषण पर रोक' रखा गया था।

क) चित्रकला प्रतियोगिता का विषय क्या था?

.....

.....

ख) रोशनी ने प्रतियोगिता के बारे में कहाँ से जानकारी प्राप्त की?

.....

.....

ग) 'कला एवं संस्कृति संस्था द्‌वारा आयोजित की गई प्रतियोगिताओं से क्या लाभ होता था?

.....

.....

घ) वर्ण–विच्छेद कीजिए:–

i) प्रसिद्‌ध – .....

ii) संस्कृति – .....

प्रश्न–2 शब्द अर्थः-

i) होनहार ..... vi) प्रदूषण .....

ii) मात्र ..... vii) अवकाश .....

iii) अवस्था ..... viii) प्रकाशित .....

iv) कार्यरत ..... ix) आयोजन .....

v) संपूर्ण ..... x) प्रतियोगिता .....

प्रश्न–3 वाक्य बनाइएः-

i) चित्रकारी– .....

.....

ii) प्रतियोगिता– .....

.....

iii) घोषणा– .....

.....

iv) पुरस्कार– .....

.....

प्रश्न–4 आप अपने खाली समय में क्या करना पसंद करते हैं? अपने शौक के बारे में अनुच्छेद लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भाषा, लिपि और व्याकरण

भाषा - भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं।

भाषा के प्रकार - मौखिक, लिखित।

लिपि - भाषा के लिखित रूप के लिए जिन ध्वनि चिह्नों का प्रयोग किया जाता है उन्हें लिपि कहते हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो भाषा के लिखित रूप का आधार उस भाषा की लिपि होती है।

प्रत्येक भाषा की अपनी-अपनी लिपि होती है।

जैसे :-	**भाषा**	**लिपि**
	हिंदी	देवनागरी
	मराठी	देवनागरी
	संस्कृत	देवनागरी
	अंग्रेजी	रोमन
	पंजाबी	गुरूमुखी
	तमिल	तमिल
	उर्दू	फ़ारसी

हिंदी को भारत की राजभाषा 14 सितंबर 1949 को बनाया गया जिसकी लिपि देवनागरी हैं।

व्याकरण - व्याकरण के द्वारा हम भाषा को शुद्ध रूप में लिखना, पढ़ना व बोलना सीखते हैं।

व्याकरण के तीन मुख्य भाग हैं :

1. वर्ण विचार 2. शब्द विचार 3. वाक्य विचार

वर्ण विचार - इसमें वर्णों के आकार, भेद, उच्चारण और उनके मिलाने की विधि बताई जाती है। यह भाषा की सबसे छोटी इकाई है।

शब्द विचार - शब्दों के भेद, रूप और उत्पत्ति पर विचार किया जाता है।

वाक्य विचार - वाक्यों के भेद, वाक्य बनाने और अलग करने की विधि तथा विराम चिह्नों का वर्णन किया जाता है।

अभ्यास

1. **भाषा किसे कहते हैं? हमारे देश की राजभाषा कौन सी है?**

.....

.....

.....

.....

क्र. सं.	प्रांत	भाषा
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		

2. पाँच भारतीय प्रांतों के नाम और उनमें बोली जाने वाली भाषाओं के नाम लिखिए :

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए-

वर्ण, शब्दों, लिखित, लिपि, व्याकरण

1. जो भाषा लिखकर प्रकट की जाए ..... भाषा कहते हैं।
2. भाषा की सबसे छोटी इकाई ..... है।
3. वाक्य ..... से बनते हैं।
4. भाषा लिखने की विधि ..... कहलाती है।
5. ..... के माध्यम से हम भाषा को शुद्ध रूप में लिखना व बोलना सीखते हैं।

गतिविधि

मेरे परिवार की भाषाएँ

		भाषाएँ (नाम लिखें)	बोल सकते हैं	लिख सकते हैं	पढ़ सकते हैं
दादाजी	1.				
	2.				
दादीजी	1.				
	2.				
पिताजी	1.				
	2.				
माताजी	1.				
	2.				
मैं	1.				
	2.				

वर्ण विचार

व्यंजन और स्वर मिलकर वर्णमाला बनाते हैं।

स्वर - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यंजन - क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

संयुक्त व्यंजन

क्ष = क् + ष् + अ

त्र = त् + र् + अ

ज्ञ = ज् + ञ् + अ

श्र = श् + र् + अ

अभ्यास

प्रश्न–1. मात्राएँ बदलकर नए शब्द बनाइए -

काल – कला कील – ....

जला – .... नीना – ....

प्रश्न–2. नीचे दिए गए व्यंजन वर्णों में मात्रा लगाकर शब्द बनाइए-

टम_टर ख_ र_ प_लक

त__र__ आल__ __शमल__मर्च

प्रश्न–3. संयुक्त व्यंजनों से शब्द बनाइए-

i) क् + का = क्का – पक्का, ...

ii) क् + ख = क्ख – ....

iii) च् + छ = च्छ – ....

iv) त् + ता = त्ता – ....

v) स् + त = स्त – ....

vi) क् + य = क्य – ....

vii) द् + ध = द्ध – ....

प्रश्न–4. इन वर्णों का प्रयोग कर शब्द बनाइए-

i) क्ष– ....

ii) त्र– ....

iii) ज्ञ– ....

iv) श्र– ....

प्रश्न–5. व्यंजन और स्वर जोड़कर नए शब्द बनाइए-

i) क् + ओ + य् + अ + ल् + अ = कोयल

ii) स् + उ + ब् + अ + ह् + अ = ...

iii) ल् + अ + ड् + ड् + ऊ = ...

iv) म् + इ + ठ् + आ + ई = ...

v) म् + ऋ + ग् + अ = ...

vi) प् + र् + अ + य् + ओ + ग् + अ = ...

vii) छ् + उ + ट् + ट् + ई = ...

viii) च् + इ + ड़् + इ + य् + आ = ...

ix) स् + व् + आ + स् + थ् + य् + अ = ...

x) क् + ष् + अ + म् + आ = ...

प्रश्न–6. वर्ण - विच्छेद कीजिए -

i) विद्‌या – .....

ii) शिक्षक – .....

iii) हरियाली – .....

iv) अनगिनत – .....

v) बोलना – .....

vi) तितली – .....

vii) त्रिशूल – .....

viii) अभिज्ञान – .....

ix) नर्तकी – .....

x) प्रतिज्ञा – .....

गिनती (हिंदी अंक लिखिए)

51. इक्यावन	61. इकसठ	71. इकहत्तर	81. इक्यासी	91. इक्यानवे
52. बावन	62. बासठ	72. बहत्तर	82. बयासी	92. बानवे
53. तिरपन	63. तिरसठ	73. तिहत्तर	83. तिरासी	93. तिरानवे
54. चौवन	64. चौंसठ	74. चौहत्तर	84. चौरासी	94. चौरानवे
55. पचपन	65. पैंसठ	75. पचहत्तर	85. पचासी	95. पचानवे
56. छप्पन	66. छियासठ	76. छिहत्तर	86. छियासी	96. छियानवे
57. सत्तावन	67. सड़सठ	77. सतहत्तर	87. सत्तासी	97. सत्तानवे
58. अट्ठावन	68. अड़सठ	78. अठहत्तर	88. अठासी	98. अट्ठानवे
59. उनसठ	69. उनहत्तर	79. उन्नासी	89. नवासी	99. निन्यानवे
60. साठ	70. सत्तर	80. अस्सी	90. नब्बे	100. सौ

बाघ से टक्कर (अपठित गद्यांश)

"एक दिन एक गधा मैदान में उगी हरी–हरी नरम घास चर रहा था। अचानक एक बाघ उधर आ निकला। गधा समझ गया कि अब बाघ उसे ज़िंदा नहीं छोड़ेगा। भागने का भी कोई मौका नहीं था। गधे ने झट से एक तरकीब सोची। उसने एक पाँव से लगंड़ाकर चलना शुरू कर दिया। बाघ ने जब गधे को लंगड़ाते देखा तो पूछा, "क्यों गधे, तू लंगड़ा–लंगड़ाकर क्यों चल रहा है?"

गधे ने जवाब दिया "क्या बताऊँ सरकार, घास चरते–चरते एक लंबा –सा काँटा पैर में चुभ गया है। पैर में बड़ा दर्द हो रहा है। इसी से मैं लंगड़ाकर चल रहा हूँ।

"चलो अच्छा हुआ! अब तू मेरे हाथों से बचकर भाग भी नहीं सकता। तुझे खाकर मैं अपनी भूख मिटाऊँगा" बाघ ने कहा। गधे ने कहा, "जब आपने मुझे खाने का विचार कर ही लिया है, तो पहले मेरे पैर से काँटा तो निकाल दीजिए। मुझे खाते हुए यदि यह काँटा आपके गले में अटक जाए तो आपकी जान मुसीबत में पड़ जाएगी।

बाघ को गधे की बात ठीक लगी। वह बोला, "ला, अपना पैर उठाकर दिखा।"

गधे ने पैर उठा लिया। बाघ ध्यान से काँटा ढूँढ़ने लगा। गधे ने मौका देखकर कसकर दुलत्ती बाघ के मुँह पर मारी और वहाँ से भाग निकला।

दुलत्ती की चोट से बाघ का मुँह टेढ़ा हो गया, दाँत भी टूट गए और गधा हाथ से निकल गया सो अलग।

अभ्यास

गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क) बाघ को सामने देखकर गधे ने क्या सोचा?

.....

.....

ख) बाघ को देखकर गधे ने क्या किया?

.....

.....

ग) गधे ने अपने लंगड़ाने का क्या कारण बताया?

.....

.....

घ) गधा कैसे बचा?

.....

.....

ङ) इस कहानी से क्या सीख मिलती है?

.....

.....

खत्म न होने वाली कहानी (अपठित गद्यांश)

'अरब देश के सुलतान को कहानियाँ सुनने का बहुत शौक था। एक दिन उसने अपने वज़ीर से कहा, "मैं एक ऐसी कहानी सुनना चाहता हूँ जो कभी खत्म न हो। क्या तुम मुझे ऐसी कहानी सुना सकते हो?"

वज़ीर घबरा गया। ऐसी कहानी वह भला कहाँ से लाकर सुनाए। उसे कुछ सुझाई न दिया। उसकी बीवी ने पूछा, "क्या बात है, आप इतने परेशान क्यों हैं?

वज़ीर ने जब अपनी परेशानी का कारण बताया तो वह बोली, "बस, इतनी सी बात है। मैं सुलतान को कभी खत्म न होने वाली कहानी सुनाऊँगी। आप चिंता छोड़ दीजिए।"

अगले दिन वज़ीर अपनी बेगम को लेकर सुलतान के पास गया और बोला, "हुज़ूर मेरी बेगम को ऐसी कहानी आती है जो कभी खत्म न हो।" सुलतान ने कहा, "ठीक है, सुनाओ।"

वज़ीर की बेगम ने सुलतान के सामने एक शर्त रखी। उसने कहा, "हुज़ूर, जब तक मेरी कहानी खत्म न हो जाए, आप अपनी जगह से उठेंगे नहीं।'

"मंजूर है", सुलतान ने कहा।

बेगम ने कहानी शुरू की, "चावल का एक गोदाम था – भरा हुआ। हवा और रोशनी के लिए उसमें एक छोटा–सा रोशनदान था। एक चिड़िया उस रोशनदान से गोदाम में घुसती और चावल का दाना लेकर हो जाती फुर्र.....। फिर आती और चावल का दाना लेकर उड़ जाती फुर्र.....फुर्र।"

वज़ीर की बेगम बस यही बात दोहराती रही।

सुलतान परेशान हो उठा और बोला, "यह फुर्र..... फुर्र क्या लगा रखी है? कहानी को आगे बढ़ाओ।"

वज़ीर की बेगम बोली, "हुज़ूर, गोदाम के चावल जब तक खत्म नहीं होंगे, कहानी आगे कैसे बढ़ेगी?

अभ्यास

गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क) सुलतान ने वज़ीर से क्या कहा?

.....

.....

ख) वज़ीर की परेशानी सुनकर बेगम क्या बोली?

.....

.....

ग) वज़ीर की बेगम ने सुलतान के सामने क्या शर्त रखी?

.....

.....

घ) सुलतान क्यों परेशान हो उठा?

.....

.....

जुलाई

कला का सम्मान (पठित गद्यांश)

प्रश्न-1. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

लक्ष्मी : बाबा, मुझे भी सिखाओ ना खिलौने बनाना। मैं भी आपकी तरह सुंदर खिलौने बनाऊँगी।

किशन : तुझे! अरे, लड़कियाँ कभी मूर्ति–खिलौने नहीं बनातीं!

लक्ष्मी : क्यों नहीं! मुझे अगर सिखाओगे तो मैं भी बना सकूँगी।

किशन : नहीं, लड़कियों को यह काम नहीं सिखाया जाता। *(खाँसते हुए)* जब बबुआ बड़ा हो जाएगा तो उसे सिखाऊँगा।

लक्ष्मी : बबुआ तो बहुत छोटा है। तब तक मुझे सिखाओ न बाबा!

किशन : कह तो दिया लड़की को नहीं सिखाते।

लक्ष्मी : पर क्यों?

किशन : नहीं सिखाते बस! सिखाकर फ़ायदा क्या है... कुछ सालों में शादी करके तू चली जाएगी।

क) किशन कौन था?

.....

.....

ख) किशन लक्ष्मी को खिलौने बनाना क्यों नहीं सिखाना चाहता था?

.....

.....

ग) किशन किसे खिलौने बनाना सिखाने के बारे में सोच रहा था?

.....

.....

घ) समान अर्थ वाले शब्द छाँटकर लिखिए–

i) लाभ– .....

ii) वर्षा – .....

प्रश्न–2. शब्द अर्थ-

i) अन्य ..... iv) अव्वल .....

ii) कलाकार ..... v) हुनर .....

iii) वज़ीफा ..... vi) नुमाइश .....

प्रश्न–3. वाक्य बनाइए-

i) अवसर– .....

.....

ii) खिलौने– .....

.....

iii) बीमार– .....

.....

iv) मदद– .....

.....

v) दंग रह जाना– .....

.....

प्रश्न–4. क्या आप लक्ष्मी के पिता किशन की लड़कियों को पैसे न कमाने देने की सोच से सहमत हैं? क्यों/क्यों नहीं? (7–8 पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

संज्ञा

किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, एवं भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं-

(1) **व्यक्तिवाचक संज्ञा** (2) **जातिवाचक संज्ञा** (3) **भाववाचक संज्ञा**

(4) **द्रव्यवाचक संज्ञा** (5) **समूहवाचक संज्ञा**

1) **व्यक्तिवाचक संज्ञा**

किसी विशेष व्यक्ति, स्थान, या वस्तु के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे – मोहन, आगरा, ताजमहल, गंगा, रामायण आदि।

कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ

व्यक्तियों के नाम - रोहन, कृष्ण, मधु, मनमोहन सिंह आदि।

स्थानों के नाम - दिल्ली, पटना, जापान, इंग्लैंड आदि

त्योहारों के नाम - दीपावली, होली, ईद, क्रिसमस, गुरुपर्व आदि

दिनों एवं महीनों के नाम - सोमवार, मंगलवार ....., जनवरी, फरवरी ..... आदि।

2) **जातिवाचक संज्ञा** -

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति (प्राणी), वस्तु या स्थान की पूरी जाति का बोध कराते हैं, वे जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

जैसे – लड़का, शहर, गाय, नदी, किताब, फल, सब्ज़ी, सेब, भिंडी आदि।

3) **भाववाचक संज्ञा -**

जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के गुण–दोष, दशा आदि का बोध कराते हैं, वे भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं।

जैसे - खुशी, लालच, दया, सुंदरता, मेहनत, भलाई आदि।

हम इन्हें छू नहीं सकते, केवल अनुभव कर सकते हैं।

4) **द्रव्यवाचक संज्ञा -**

जो संज्ञा शब्द किसी धातु, द्रव्य, पदार्थ आदि का बोध कराते हैं, वे द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

जैसे - दूध, पानी, सोना, चाँदी, चावल आदि।

5) **समूहवाचक संज्ञा**

जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु आदि के समूह या समुदाय का बोध होता है, वे समूहवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

जैसे - झुंड, टोली, भीड़, ढेर, गड्डी, सेना, कक्षा, जनता, जुलूस आदि।

अभ्यास

प्रश्न–1. संज्ञा के भेदों के अनुसार तीन-तीन शब्द ढूँढ़कर लिखिए-

पा	स	ता	प	से	क	न	म	को
नी	ल	ज	य	मु	ना	रा	नी	य
री	रा	म	न	से	ह	के	म	ल
ताँ	कि	ह	दी	पी	गु	र	दे	वे
बा	हो	ल	क	त	ला	ल	च	ला
से	क	खे	ते	ल	ब	हो	सि	च
ढे	छ	क्षा	दू	ने	खु	शी	म	में
र	ऋ	ज	ध	झ	प	रि	श्र	म

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा – ....

(ख) जातिवाचक संज्ञा – ....

(ग) भाववाचक संज्ञा – ....

(घ) द्रव्यवाचक संज्ञा – ....

(ङ) समूहवाचक संज्ञा – ....

प्रश्न–2. नीचे लिखे रेखांकित संज्ञा शब्दों के भेद लिखिए।

(क) तुमने <u>महाभारत</u> पढ़ी है? .....

(ख) <u>बिल्ली</u> कुत्ते से डरती है। .....

(ग) अयोध्या के <u>राजा</u> राम थे। .....

(घ) मुझे शेर से <u>डर</u> लगता है। .....

(ङ) <u>पुलिस</u> चोर को पकड़कर ले गई। .....

(च) मुझे <u>थकान</u> लग रही है। .....

(छ) गरम <u>दूध</u> पी लो। .....

(ज) मेरी अँगूठी <u>सोने</u> की है। .....

प्रश्न–3. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

i) सरल ..... iv) बच्चा .....

ii) कोमल ..... v) भला .....

iii) मित्र ..... vi) लंबा .....

प्रश्न–4. इन चित्रों के लिए एक जातिवाचक संज्ञा तथा एक व्यक्तिवाचक संज्ञा लिखिए-

		जातिवाचक	व्यक्तिवाचक
i)		.....	.....
ii)	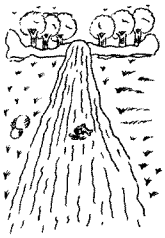	.....	.....
iii)	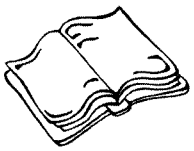	.....	.....

लिंग

संज्ञा के जिस रूप से पुरूष जाति या स्त्री जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद

लिंग के दो भेद होते हैं-

(क) स्त्रीलिंग (ख) पुल्लिंग

(क) **स्त्रीलिंग** - संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसकी स्त्री जाति का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे - लड़की, स्त्री, बहन, धोबिन आदि।

(ख) **पुल्लिंग** - संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसकी पुरुष जाति का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं।

जैसे - लड़का, पुरुष, भाई, धोबी आदि।

पुल्लिंग की पहचान

⟶ 'अ' ध्वनि से समाप्त होने वाली संज्ञाएँ।
जैसे – वर, चावल, घर, पुत्र, फूल आदि।

⟶ पेड़ों के नाम – आम, अमरूद, पीपल, नीम आदि।

⟶ देशों के नाम – भारत, चीन, जापान, अमरीका आदि।

⟶ पर्वतों के नाम – हिमालय, विंध्याचल, आदि।

⟶ दिनों के नाम – सोमवार, मंगलवार, बुधवार आदि।

⟶ कुछ महीनों के नाम – मार्च, अप्रैल, जून आदि।

⟶ कुछ शब्द हमेशा पुल्लिंग होते हैं। इन्हें **नित्य पुल्लिंग** कहा जाता है।
जैसे – तोता, खरगोश, उल्लू, कौआ, कछुआ आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान

⟶ 'ई', 'आई', और 'इया' से समाप्त होने वाले शब्द। जैसे – भलाई, लड़की, मक्खी,
⟶ गुड़िया आदि।

⟶ नदियों के नाम – गंगा, यमुना, कृष्णा, गोदावरी आदि।

⟶ कुछ महीनों के नाम – जनवरी, फ़रवरी, मई आदि।

⟶ भाषाओं, बोलियों व लिपि के नाम – हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी, देवनागरी, रोमन, पंजाबी आदि।

⟶ कुछ शब्द हमेशा स्त्रीलिंग होते हैं। इन्हें **नित्य स्त्रीलिंग** कहते हैं।
जैसे – मक्खी, तितली, मछली, कोयल आदि।

नित्य पुल्लिंग या नित्य स्त्रीलिंग शब्दों के लिंग बदलने के लिए 'नर' या 'मादा' शब्द लगाते हैं।

जैसे – (क) खरगोश – मादा खरगोश, कछुआ – मादा कछुआ

(ख) तितली – नर तितली, मछली – नर मछली

अभ्यास

प्रश्न–1. लिंग बदलिए

(क) विदुषी – .....
(ख) सम्राट – .....
(ग) वीर – .....
(घ) कवि – .....
(ङ) जादूगर – .....
(च) हाथी – .....
(छ) चूहा – .....
(ज) पति – .....
(झ) दूल्हा – .....
(ञ) वर – .....

प्रश्न–2. नीचे लिखे शब्दों को अलग-अलग छाँटकर लिखिए।

कहानी पेड़ आम दीपावली
पंखा मेज़ हवा घर सड़क धरती
दाल बगीचा परदा दूध
विद्यालय किताब

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

प्रश्न–3. लिंग बदलकर वाक्य दुबारा लिखिए–

(क) शिक्षक पढ़ा रहे हैं।

.....

(ख) धोबी कपड़े धोता है।

.....

(ग) कछुआ धीरे–धीरे चलता है।

.....

(घ) नर्तकी नृत्य कर रही है।

.....

(ङ) भिखारी दरवाज़े पर खड़ा है।

.....

वचन

संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

वचन के भेद

वचन के दो भेद होते हैं-

(1) एकवचन (2) बहुवचन

1. **एकवचन** - संज्ञा के जिस रूप से उसके एक होने का पता चले, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे – चिड़िया, गाड़ी, पंखा, चूहा आदि।
2. **बहुवचन** - संज्ञा के जिस रूप से उसके अनेक होने का पता चले उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे – चिड़ियाँ, गाड़ियाँ, पंखे, चूहे आदि।

⟶ **कुछ मुख्य बातें**

आदर देने के लिए बहुवचन क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

⟶ जैसे – गुरुजी पढ़ा रहे हैं। माँ खाना बना रही हैं आदि।

कुछ शब्द सदैव बहुवचन में प्रयोग किए जाते हैं।

⟶ जैसे – आँसू, बादल, प्राण, साधु आदि।

द्रव्यसूचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयोग की जाती हैं।

⟶ जैसे – घी, तेल, दूध, पानी आदि।

संबंध बताने वाले संज्ञा शब्द एकवचन और बहुवचन में एक समान रहते हैं।

जैसे – नाना, चाचा, दादा आदि।

अभ्यास

प्रश्न–1. वचन बदलिए–

(क) सखी – सखियाँ

(ख) नदी – .....

(ग) मिठाई – .....

(घ) मक्खी – .....

(ङ) रज़ाई – .....

(क) बहू – .....

(ख) वधू – .....

(ग) ऋतु – .....

(घ) वस्तु – .....

(क) चिड़िया – .....
(ख) चुहिया – .....
(ग) डिबिया – .....
(घ) पुड़िया – .....

(क) माला – .....
(ख) कथा – .....
(ग) भाषा – .....
(घ) परीक्षा – .....

(क) कपड़ा – .....
(ख) बच्चा – .....
(ग) बेटा – .....
(घ) पत्ता – .....
(ङ) पौधा – .....

(क) पतंग – .....
(ख) किताब – .....
(ग) आवाज़ – .....
(घ) पुस्तक – .....
(ङ) बात – .....

प्रश्न–2. वाक्य शुद्ध करके लिखिए-

(क) वह विद्यालय जा रहे हैं। .....
(ख) पतंगें उड़ती है। .....
(ग) माली ने पौधा लगाए। .....
(घ) पुस्तकें मेज़ पर पड़ी है। .....
(ङ) पेड़ पर चिड़ियाँ बैठी है। .....

प्रश्न–3. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए-

(क) मोहन ..... में गिर गया। (गड्डा/गड्ढे)
(ख) तुम्हारी ..... खत्म ही नहीं होतीं। (बात/बातें)
(ग) ..... चर रही हैं। (गाय/गाएँ)
(घ) ..... पिताजी तुम्हें बुला रहे हैं। (मेरा/मेरे)
(ङ) यह ..... अच्छी है। (किताब/किताबें)
(च) मुझे दस ..... दो। (रुपया/रुपए)

औपचारिक पत्र

अपनी प्रधानाचार्या को छुट्टी के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।

सेवा में

प्रधानाचार्या
संस्कृति स्कूल
नई दिल्ली

विषय - छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र

महोदया

मुझे कल से तेज़ बुखार है। डॉक्टर ने मुझे चार दिन आराम करने की सलाह दी है। अतः मैं स्कूल नहीं आ सकूँगा।

मुझे दिनांक 12.07.17 से 15.07.18 तक चार दिन की छुट्टी देने की कृपा करें।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य/आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या

क. ख. ग.
कक्षा–5
12.07.17

अपनी प्रधानाचार्या को विद्यालय में पुस्तक-प्रदर्शनी आयोजित करवाने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

सेवा में

प्रधानाचार्या

संस्कृति स्कूल

_____

विषय _____

महोदया

_____

_____

_____

_____

_____

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य/आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या

_____

कक्षा _____

दिनांक _____

आपसे अपनी कक्षा की खिड़की का काँच टूट गया। अपनी प्रधानाचार्या को पत्र लिखकर क्षमा माँगिए।

सेवा में

_____

_____

_____

विषय –_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

सधन्यवाद

_____

_____

_____

_____

अगस्त

हमारे बदलते गाँव (पठित गद्यांश)

प्रश्न–1. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

"पर चाचू तो खेत में ट्रैक्टर चलाते हैं। वे तो खेती का सारा काम ट्रैक्टर से करते हैं।" मोनू दादा जी की बात काटकर बोला।

"ठीक कह रहे हो बेटा," दादा जी ठंडी साँस लेकर बोले। "ये लोहे के दानव अब गाँव तक भी पहुँच गए हैं। पर इनसे खाद के लिए गोबर नहीं मिलता। इनका धुआँ हमारे वातावरण को प्रदूषित कर देता है। गाँव की स्वास्थ्यवर्धक हवा इस धुएँ से ज़हरीली होने लगी है। इन यंत्रों से कुछ लाभ हैं तो कुछ हानियाँ भी।"

क) गद्यांश के पाठ का नाम बताइए।

.....

.....

ख) यहाँ, 'लोहे के दानव' किनके लिए कहा गया है?

.....

.....

ग) ट्रैक्टरों के क्या-क्या नुक़सान हैं?

.....

.....

घ) गद्यांश में से चुनकर कोई दो गुणवाचक विशेषण लिखिए:

(i) ..... (ii) .....

प्रश्न–2. शब्द अर्थ :-

(i) स्वाभाविक ..... (iv) अचरज .....

(ii) व्यापार ..... (v) पोखर .....

(iii) हानि ..... (vi) रफ़्तार .....

प्रश्न–3. वाक्य बनाइए :-

(i) उज्ज्वल– .....

.....

(ii) दृश्य– .....

.....

(iii) झुंड– .....

.....

(iv) शक्ति– .....

.....

प्रश्न–4. अपने वातावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए हम बच्चे क्या-क्या कर सकते हैं? (5–6 पंक्तियों में बताइए।) -

.....

.....

.....

.....

.....

.....

सितंबर

सूरज का गोला (पठित पद्यांश)

प्रश्न–1. कविता पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

सूरज का गोला
इसके पहले ही कि निकलता
चुपके–से बोला
हमसे तुमसे इससे उससे
कितनी चीज़ों से
चिड़ियों से पत्तों से
फूल–फलों के बीजों से–
"मेरे साथ–साथ सब निकलो
घने अँधेरे से
कब जागोगे अगर न जागे,
मेरे टेरे से?"
आगे बढ़कर आसमान ने
अपना पट खोला
इसके पहले ही कि निकलता
सूरज का गोला!
फिर तो जाने कितनी बातें हुई
कौन गिन सके इतनी बातें हुई
पंछी चहके कलियाँ चटकीं
डाल–डाल चमगादड़ लटकीं
गाँव–गली में शोर मच गया
जंगल–जंगल मोर नच गया!
जितनी फैलीं खुशियाँ
उससे किरणें ज़्यादा फैलीं,
ज़्यादा रंग घोला!
और उभरकर ऊपर आया
सूरज का गोला
सबने उसकी अगवानी में
अपना पट खोला!

– श्री भवानीप्रसाद मिश्रा

क) सूरज चुपके से क्या बोला?

.....

.....

ख) सुबह होने पर चिड़ियों ने क्या किया?

.....

.....

ग) आसमान के पट खोलते ही क्या-क्या हुआ?

.....

.....

घ) सूरज का स्वागत किस-किसने किया?

.....

.....

प्रश्न–2. शब्द अर्थ :-

(i) घने ..... (iv) उभरकर .....

(ii) किरणें ..... (v) डाल .....

(iii) चहके ..... (vi) चटकीं .....

प्रश्न–3. वाक्य बनाइए -

(i) अँधेरे .....

.....

(ii) गाँव .....

.....

(iii) जंगल .....

.....

(iv) पंछी .....

.....

प्रश्न–4. सूरज निकलने पर आप क्या-क्या करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया या अन्य शब्दों से ज्ञात हो, वह कारक कहलाता है।

चलिए! इस उदाहरण से समझते हैं-

मैं रास्ते जा रहा था कि अचानक मेरी नज़र सड़क पड़ी। मैंने देखा कि रास्ते बीचों–बीच गाय एक बछड़ा बैठा हुआ है। मैंने किनारे पड़ी एक टहनी उठाया और बछड़े उस टहनी हटाने लगी।

इस अनुच्छेद में से, पर, के, का शब्दों की कमी दिखाई देती है।

शब्दों को आपस में जोड़ने वाले यही शब्द कारक - चिह्न कहलाते हैं।

कारक	**विभक्ति-चिह्न**
कर्ता	ने (चिह्न रहित)
कर्म	को
करण	से, के द्वारा, के साथ
संप्रदान	को, के लिए (दान देना)
अपादान	से (अलग होना, डरना, तुलना)
संबंध	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी
अधिकरण	में, पर
संबोधन	हे! अरे! ओ!

प्रश्न–1. उचित कारक-चिह्नों द्वारा खाली स्थान भरिए-

(क) आसमान ..... तारे टिमटिमा रहे हैं।

(ख) आम के पेड़ ..... कोयल कुहुक रही है।

(ग) रोहन बाज़ार ..... फल–सब्ज़ी ला रहा है।

(घ) राधा ..... मधुर गीत सुनाया।

(ङ) मोहन राजू ..... मदद माँगने आया है।

प्रश्न–2. निम्नलिखित शब्दों के सामने कारक का नाम लिखिए-

(i) के लिए – .....

(ii) पर – .....

(iii) अरे! – .....

(iv) से (अलग)– .....

(v) के द्वारा – .....

(vi) की – .....

प्रश्न–3. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और रेखांकित शब्दों के भेद बताइए-

(क) <u>मोहन ने</u> पत्र लिखा। .....

(ख) <u>मेज़ पर</u> पुस्तकें रखी हैं। .....

(ग) अजय <u>घोड़े से</u> गिरता है। .....

(घ) यह <u>छात्रों का</u> विद्यालय है। .....

(ङ) <u>अरे!</u> तुम कब आए? .....

(च) माँ <u>बच्चे को</u> खिलाती हैं। .....

(छ) भूखे <u>व्यक्ति को</u> खाना दो। .....

(ज) वह <u>कलम से</u> लिखता है। .....

विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता या गुण बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं।

विशेषण के चार भेद होते हैं-

1. गुणवाचक 2. संख्यावाचक 3. परिमाणवाचक 4. सार्वनामिक

1. **गुणवाचक विशेषण** - जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के गुण, अवस्था, रूप, रंग, आकार आदि का बोध कराते हैं, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

उदाहरण रूप–रंग – नीला, गोरा, हरा, पीला, सुंदर, कुरूप

गुण – भोला, चतुर, मूर्ख, वाचाल, चंचल

अवस्था – युवा, बीमार, स्वस्थ, कमज़ोर

आकार – बड़ा, लंबा, गोल, चौकोर

2. **संख्यावाचक** - जो शब्द संज्ञा शब्दों की संख्या बताते हैं, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

संख्यावाचक विशेषण को दो भागों में बांटा जा सकता है-

(क) निश्चित संख्यावाचक : जैसे – एक, दो, तीन, चार ..... आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक : जैसे – कुछ बच्चे, कई आदमी आदि।

3. **परिमाणवाचक विशेषण** - जो शब्द संज्ञा शब्दों की माप–तौल बताते हैं, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

परिमाणवाचक विशेषण को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(क) निश्चित परिमाणवाचक : जैसे – एक किलो (आलू) दो मीटर (कपड़ा) आदि।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक : जैसे – थोड़ी (चीनी), बहुत (नमक) आदि।

4. सार्वनामिक विशेषण – जो शब्द संज्ञा शब्दों के पहले लगकर उसकी विशेषता बताते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे - यह पुस्तक मज़ेदार है। वह आदमी बीमार है।

आओ अभ्यास करें :

प्रश्न–1. दिए गए विशेषण शब्दों को उचित स्थान में लिखिए :

चटपटा, चालाक, दो मीटर, उस, 100 किलोमीटर, जापानी, यह, दो, तीसरा, चार सौ, पाँच किलो, वह

गुणवाचक	संख्यावाचक	परिमाणवाचक	सार्वनामिक
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

प्रश्न–2. विशेषण को विशेष्य से मिलाइए :

क)	दो लीटर	पहाड़
ख)	ऊँचा	लोग
ग)	काले	दूध
घ)	अधिक	आदमी
ङ)	कमज़ोर	दिन
च)	सुहाना	बाल

प्रश्न–3. दिए गए चित्रों के सामने दो-दो विशेषण लिखकर उनके भेद लिखें:-

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न–4. निम्नलिखित वाक्यों मे से विशेषण शब्द छाँटकर भेद लिखिए-

क) सचिन तेंदुलकर खिलाड़ी हैं। .....

ख) राधा के पास थोड़े लड्डू हैं। .....

ग) मोहन दो लीटर दूध लाया है। .....

घ) वह कोयल गा रही है। .....

ङ) भारतीय सैनिक बहादुर होते हैं। .....

प्रश्न–5. उचित विशेषण शब्द लिखकर वाक्य पूरे कीजिएः-

(क) आज का दिन बहुत ..... है। (गुणवाचक विशेषण)

(ख) दिल्ली में ..... किला स्थित है। (गुणवाचक विशेषण)

(ग) गायक ने ..... गीत सुनाकर सबका मन जीत लिया। (गुणवाचक विशेषण)

(घ) हमारी धरती पर ..... प्रकार के जीव जंतु हैं। (संख्यावाचक विशेषण)

(ङ) मोहन बाज़ार से ..... आम खरीदने गया। (परिमाणवाचक विशेषण)

(च) चाय में ..... चीनी है। (परिमाणवाचक विशेषण)

(छ) ..... किताब तुम ले जाओ। (सार्वनामिक विशेषण)

(ज) मैंने अपने दोस्त को ..... तोहफ़ा दिया। (संख्यावाचक विशेषण)

अनुच्छेद - लेखन

पुस्तकों से लाभ

संकेत बिंदु

मनुष्य की मित्र-प्रमुख लाभ-जानकारी-मनोरंजन, प्राचीन इतिहास-धार्मिक-पुस्तकें क्यों पढ़ें?

पुस्तकों को मनुष्य का मित्र कहा गया है। मित्र सदा अच्छी राय देता है, राह दिखाता है और रक्षा करता है। पुस्तकें भी मित्र की ही भाँति हमें राय देती हैं, मार्ग दिखाती हैं और संकट में हमारी रक्षा करती हैं। पुस्तकों से लाभ ही लाभ है। पुस्तकें हमें ज्ञान देती हैं। आज हर प्रकार की जानकारी पुस्तकों में हैं। कंप्यूटर की पुस्तकें हैं, विज्ञान की पुस्तकें हैं, कला की पुस्तकें हैं। किसी भी विषय का नाम लीजिए, उस पर पुस्तक मिल जाएगी। पुस्तकों से हमारा ज्ञान बढ़ता है। पुस्तकें मनोरंजन भी करती हैं। उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ, नाटक आदि हम मनोरंजन के लिए पढ़ते हैं। प्राचीन पुस्तकों से हमें अपने इतिहास का पता चलता है। वेद–पुराण हमारी प्राचीन पुस्तकें हैं। धार्मिक पुस्तकों में धर्म और कर्तव्य की बातें होती हैं। गीता, कुरान, बाइबिल आदि से हमारा ज्ञान भी बढ़ता है और मनोरंजन भी होता है। इसे ही कहते हैं – आम के आम और गुठलियों के दाम।

दस - बारह पंक्तियों का अनुच्छेद लिखिए-

वृक्षों से लाभ

समय बहुमूल्य है (अनुच्छेद लेखन)

कहानी लेखन

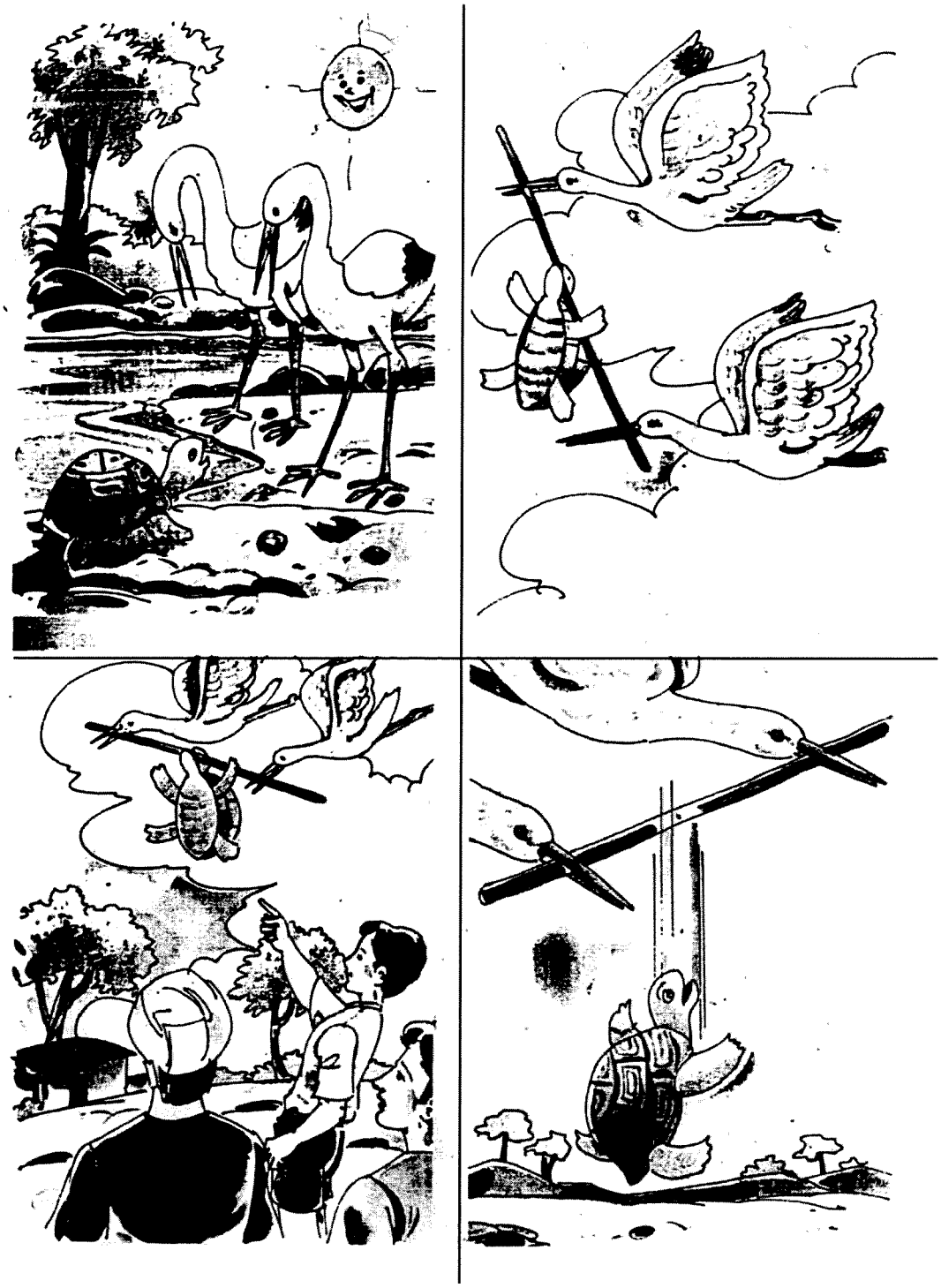

शीर्षक .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

शिक्षा .....

.....

कहानी लेखन

शीर्षक .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

शिक्षा .....

.....

अक्तूबर

सुबह (पाठ)

प्रश्न–1. गद्यांश पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

रेशमा जब पाँच साल की थी, तभी से उसके दोनों पैर काम नहीं करते थे। उसे बहुत तेज़ बुखार आया और घुटनों से नीचे दोनों पाँव एकदम बेजान हो गए। बहुत इलाज किया पर रेशमा के पाँवों में जान नहीं आई। उसे पोलियो हो गया था। रेशमा बहुत हिम्मतवाली लड़की है। अब ग्यारह साल की उम्र में वह अपने सारे काम स्वयं करती है।

एक दिन शाम को रेशमा का घर दीयों के झिलमिल प्रकाश से जगमगाने लगा। जहाँ देखो, वहाँ रोशनी ही रोशनी थी। दादीजी ने बताया कि दीपावली अँधेरे पर उजाले की जीत का त्योहार है, बुराई पर अच्छाई और असत्य पर सत्य की सदा जीत होती है। इस दिन राम रावण को पराजित कर अयोध्या लौटे थे। रेशमा और गोलू बड़े ध्यान से दादीजी की बातें सुन रहे थे। कुछ देर बाद सबने मिलकर पूजा की और प्रसाद खाया। गोलू अपने दोस्तों के साथ और रेशमा अपने दादा–दादी के साथ व्यस्त थे।

क) पोलियो होने पर रेशमा को क्या हुआ था?

.....

.....

ख) दीपावली के त्योहार पर किसकी किस पर जीत होती है?

.....

.....

ग) रेशमा और गोलू किसकी बात ध्यान से सुन रहे थे?

.....

.....

घ) **कौन-किसके साथ व्यस्त था?**

(i) गोलू .....के साथ।

(ii) रेशमा .....के साथ।

ङ) **समान अर्थ वाले शब्द लिखिए–**

(i) खुद–..... (iii) गृह–.....

(ii) साहस–..... (v) झूठ–.....

प्रश्न–2. शब्द अर्थ :-

(i) ढंग ..... (iv) फुर्ती.....

(ii) जिंदादिल..... (v) आनंद.....

(iii) परिश्रम..... (vi) पराजित.....

प्रश्न–3. वाक्य बनाइए -

(i) विकलांग .....

.....

(ii) खुराक .....

.....

(iii) व्यस्त .....

.....

(iv) पराजित .....

.....

(v) बुजुर्ग .....

.....

प्रश्न–4. बचपन का समय सबसे सुहाना समय है। क्या आपको भी बड़े होने पर ऐसा लगेगा कि यह समय न बीतता तो कितना अच्छा होता और क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

सर्वनाम

वाक्य में संज्ञा शब्दों के स्थान पर आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के छः भेद होते हैं:

पुरुषवाचक	**निश्चयवाचक**	**अनिश्चयवाचक**
प्रश्नवाचक	**संबंधवाचक**	**निजवाचक**

1. पुरुषवाचक सर्वनाम -

मैं सोने जा रहा हूँ। **तुम क्या कर रहे हो?** **वह पढ़ रहा है।**

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलनेवाले, सुननेवाले या अन्य व्यक्ति के लिए किया जाता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – मैं, तुम, वह आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं :

उत्तम पुरुष – मैं (बोलनेवाला अपने लिए)

मध्यम पुरुष – तुम (सुननेवाले के लिए)

अन्य पुरुष – वह (अन्य सभी के लिए)

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

यह कमीज़ राघव की है। **वह चाबी मेरी अलमारी की है।**

जो सर्वनाम शब्द निश्चित वस्तु या प्राणी की ओर संकेत करते हैं, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – यह, वह, ये वे, इस, उस आदि।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

तुम्हें <u>कोई</u> बुला रहा है। **पानी में <u>कुछ</u> पड़ा हुआ है।**

किसी अनिश्चित प्राणी या वस्तु के लिए प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम

बाहर <u>कौन</u> खड़ा है? **तुम <u>क्या</u> खा रहे हो?**

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – कौन, क्या, किसे, किनका, कहाँ आदि।

5. संबंधवाचक सर्वनाम

<u>जो</u> सो रहा है, <u>वह</u> बीमार है। **<u>जैसा</u> करोगे, <u>वैसा</u> भरोगे।**

जो सर्वनाम शब्द वाक्य में प्रयोग किए गए दूसरे सर्वनाम या संज्ञा शब्द से संबंध बताने के लिए प्रयोग किए जाते हैं, वे संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – जो–सो, जैसा–वैसा, जिसका–उसका, जो–वो आदि।

6. निजवाचक सर्वनाम

माँ, मैं अपना काम <u>अपने-आप</u> करूँगी। **अपना काम <u>स्वयं</u> करना चाहिए।**

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग अपने लिए किया जाता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–स्वयं, खुद, अपने–आप, आप–ही, स्वयं–ही आदि।

अभ्यास कार्य

प्रश्न–1. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो।

1. ..... दस बजे आऊँगी, ... कितने बजे आओगे? (मैं/हम/तू/तुम/आप)
2. बाहर ..... बैठा है? (कौन/क्या)
3. ..... चिल्लाएगा, उसको दंड मिलेगा। (वह/जो/कौन)
4. यह काम तुम्हें ..... करना चाहिए। (खुद/अपना)
5. यह काम ..... किया है? (कौन/किसने)
6. डिब्बे में ..... रखा है? (कितना/क्या/कुछ)

प्रश्न–2. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्द छाँटिए एवं उनके भेद भी बताइए।

		सर्वनाम	**भेद**
1.	मैंने तुम्हें नहीं, उसे बुलाया है।	.....	.....
2.	जिसकी लाठी, उसकी भैंस।	.....	.....
3.	गाँधी जी अपना काम स्वयं करते थे।	.....	.....
4.	देखो तो बाहर कौन खड़ा है?	.....	.....
5.	मुझे गाना नहीं आता।	.....	.....
6.	जो काम कर लेगा, वही खेलने जाएगा।	.....	.....

विराम चिह्न

अपनी बात स्पष्ट करने अथवा समझाने के लिए हम बीच–बीच में रुकते हैं। बोलते समय हम कहीं–कहीं रुककर अपने हाव–भाव प्रकट करते हैं। लिखे हुए को पढ़ते समय कहाँ और कितना रुका जाए इसे प्रकट करने के लिए लेखन में चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। रुकने को विराम कहते हैं। जो चिह्न रुकने का संकेत करते हैं, उन्हें विराम–चिह्न कहते हैं।

विराम चिह्न -

पूर्णविराम	(।)
अल्पविराम	(,)
प्रश्नसूचक चिह्न	(?)
विस्मयादिसूचक चिह्न	(!)
कोष्ठक	( )
उद्धरण चिह्न	" "

प्रश्न–1. विराम-चिह्नों का सही मिलान कीजिए-

(क) पूर्णविराम	!
(ख) अल्पविराम	" "
(ग) प्रश्नसूचक चिह्न	( )
(घ) विस्मयादिसूचक चिह्न	?
(ङ) कोष्ठक	,
(च) उद्धरण चिह्न	।

प्रश्न–2. वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए-

(क) आप किससे मिलना चाहते हैं

(ख) उफ़ आज बहुत गरमी है

(ग) डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन हमारे राष्ट्रपति थे

(घ) क्या आप मुंबई जाएँगे

(ङ) नेता जी ने कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा

(च) वाह कितना सुहाना दृश्य है

(छ) किसके पास भोजन नहीं है

प्रश्न–3. इन वाक्यों में दिए गलत विराम-चिह्नों की जगह सही विराम-चिह्न लगाकर वाक्य लिखिए-

(क) आप कहाँ रहते हैं!

.....

(ख) मैं पश्चिम विहार में रहता हूँ?

.....

(ग) देखो। मेरा घर कितना सुंदर है।

.....

नवम्बर

मेला (पठित गद्यांश)

प्रश्न–1. दिए गए गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

बात उन दिनों की है जब मैं दस साल की थी। हमारे घर के बिलकुल पास मेला लगा था। उस समय तक ''मेला' शब्द हमारे लिए रोमांच भरा और जिज्ञासा का शब्द था। कारण यह था कि हमने कभी मेला देखा ही नहीं था। उन्हीं दिनों हमारे चाचाजी घर आए। हम सब बच्चों ने ज़िद की, ''चाचा जी, हमें मेला देखना है।'' चाचा जी ने कहा, ''अरे भई! मैं तो बहुत थक गया हूँ। मुझसे तो अब चला नहीं जाएगा।'' यह जवाब सुनकर चाचा जी हमें किसी विलेन से कम नज़र नहीं आ रहे थे। उनका ठिगना कद, साँवला रंग और मोटी नाक बिलकुल अलग नज़र आते थे। बड़ी–घनी मूँछें और बंजर ज़मीन की खेती की तरह सिर पर उगे इक्के–दुक्के, काले–सफ़ेद बाल चाचाजी की छवि को नया ही रूप देते थे।

क) 'मेला' शब्द बच्चों के लिए रोमांच भरा और जिज्ञासा वाला क्यों था?

.....

.....

ख) चाचा जी विलेन जैसे क्यों नज़र आए थे?

.....

.....

ग) चाचा जी देखने में कैसे लगते थे?

.....

.....

घ) समान अर्थ वाले शब्द लिखिए–

(i) सूरत .....

(ii) उत्सुकता .....

ङ) 'बंजर ज़मीन' से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

प्रश्न–2. वाक्य बनाइए -

(i) उम्मीद– .....

.....

(ii) खुशामद– .....

.....

(iii) समस्या– .....

.....

(iv) पसंद– .....

.....

(vi) किराया– .....

.....

प्रश्न–3. शब्द - अर्थ -

(i) समस्या– ..... (iii) हर्ष– .....

(ii) दाम– ..... (iv) नज़दीक–.....

प्रश्न–4. हमारे विद्यालय के 'संस्कृति मेले' (कार्निवल) के बारे में 5 से 6 पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

क्रिया

वाक्य में जिस शब्द से किसी काम के होने या करने का बोध हो, वह शब्द क्रिया कहलाता है।

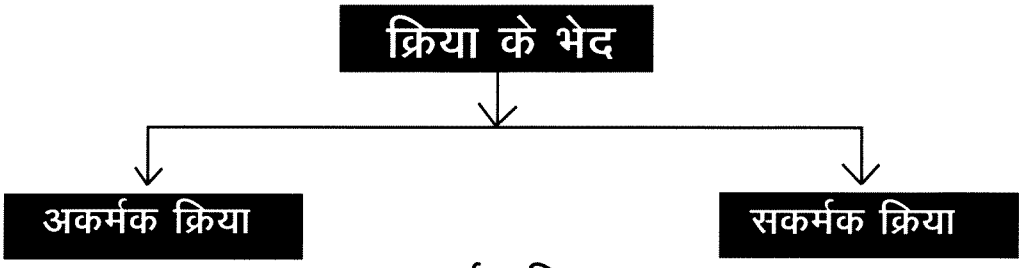

सकर्मक क्रिया

किसान खेत जोत रहा है। **विपिन पुस्तक पढ़ रहा है।**

गाय दूध देती है। **डाकिया चिट्ठी बाँटता है।**

इन वाक्यों में क्रिया– **जोत रहा है, देती है, पढ़ रहा है, बाँटता है** के साथ यदि क्या प्रश्न लगाओ तो उत्तर में जो संज्ञा शब्द मिलता है – **खेत, दूध, पुस्तक, चिट्ठी,** वह उस क्रिया का **कर्म** है। ऊपर के वाक्यों में से यदि तुम कर्म को हटा दोगे तो उनका अर्थ अधूरा रह जाएगा। यदि यह कहा जाए **कि किसान जोत रहा है या गाय देती है,** तो इन वाक्यों से पूरा अर्थ नहीं निकलता। ऐसी क्रियाओं को **सकर्मक क्रिया** कहते हैं।

वाक्य में जिस क्रिया को कर्म की आवश्यकता होती है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं। क्रिया के साथ क्या अथवा किसको लगाने पर जो उत्तर आता है, वही कर्म होता है।

अकर्मक क्रिया

घोड़ा तेज़ दौड़ता है। **मालिनी हँस रही है।** **वरुण रोज़ नहाता है।**

इन वाक्यों में दौड़ता है, हँस रही है, नहाता है– ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनके साथ कोई कर्म की आवश्यकता नहीं है। इन्हें **अकर्मक क्रिया** कहते हैं।

वाक्य में क्रिया को जब **कर्म** की आवश्यकता **नहीं होती**, उस क्रिया को **अकर्मक क्रिया कहते हैं।**

प्रश्न–1. निम्नलिखित वाक्यों में आई क्रियाओं को शुद्ध करके लिखिए :

(क) मेरी राष्ट्रभाषा हिंदी हैं।

.....

(ख) बिजली चमक रहा है।

.....

(ग) आप क्या लोगे?

.....

(घ) यह काम मैंने करा है।

.....

प्रश्न–2. सही शब्द चुनकर वाक्यों को पूरा कीजिए:-

1. जन्मदिन पर हरीश ने केक ..... । (काँटा, काटा)

   चलते समय उसके पैर में ..... चुभ गया।

2. आजकल लोग ..... की ऊँच–नीच को नहीं मानते। (जाति, जाती)

   कमला रोज़ विद्यालय ..... है।

3. भूख न होने के कारण उसने केवल ..... रोटी खाई। (आधी, आँधी)

   वर्षा होने से पूर्व ..... आ गई।

4. उसकी ..... से बदबू आती है। (सास, साँस)

सरला की ..... बहुत अच्छी है।

5. मैं किसी का ..... पानी नहीं पी सकता। (जूठा, झूठा)

उसका कोई विश्वास नहीं करता क्योंकि वह ..... है।

6. कृपया इस पृष्ठ पर अपना नाम .....। (लिखे, लिखें)

हमने अपने–अपने नाम .....।

7. लालाजी अपना हिसाब–किताब ..... में लिखते हैं। (वही, बही)

यह ..... लड़का है जिसने कल पुरस्कार जीता था।

प्रश्न–3. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाएँ रेखांकित करके उनके भेद लिखिए–

1. राम सोहन से साइकिल चलवा रहा है। .....
2. गौतम रोने लगा। .....
3. देवी सरस्वती वीणा बजाती हैं। .....
4. दिनेश पानी भरता है। .....
5. सोहन जाता है। .....
6. अरुणा जोर से हँसने लगी। .....
7. उत्कर्ष लट्टू को नचाता है। .....
8. माँ हरिओम् को सुलाती है। .....
9. पिता जी जा रहे हैं। .....
10. कांति अपनी सहेली के साथ झूला झूल रही है। .....

प्रश्न–4. खाली जगह में उपयुक्त कर्म लिखिए -

क) गौरव ..... पढ़ता है।

ख) माँ ..... बना रही हैं।

ग) बच्चे ..... खा रहे हैं।

घ) दादी ..... सुनाती है।

प्रश्न–5. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द क्या हैं? सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए -

क) मैंने <u>खाना</u> ढककर रख दिया है।

(i) संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) क्रिया (iv) विशेषण

ख) आज मुझे कुछ नहीं <u>खाना</u> है।

(i) संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) क्रिया (iv) विशेषण

ग) जल्दी <u>सोना,</u> जल्दी उठना अच्छी आदत है।

(i) संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) क्रिया (iv) विशेषण

घ) हमारी दादीजी के पास बहुत सारा <u>सोना</u> था।

(i) संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) क्रिया (iv) विशेषण

ङ) मैं जो <u>गाना</u> प्रस्तुत करने जा रही हूँ उसके रचयिता हरिवंशराय बच्चन हैं।

(i) संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) क्रिया (iv) विशेषण

च) श्रेयसी घोषाल को नाचना–<u>गाना</u> आता है।

(i) संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) क्रिया (iv) विशेषण

काल

क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध हो, उसे 'काल' कहते हैं।

क्रिया के तीन काल होते हैं :

1. **भूतकाल (Past Tense)**
2. **वर्तमान काल (Present Tense)**
3. **भविष्यत् काल (Future Tense)**

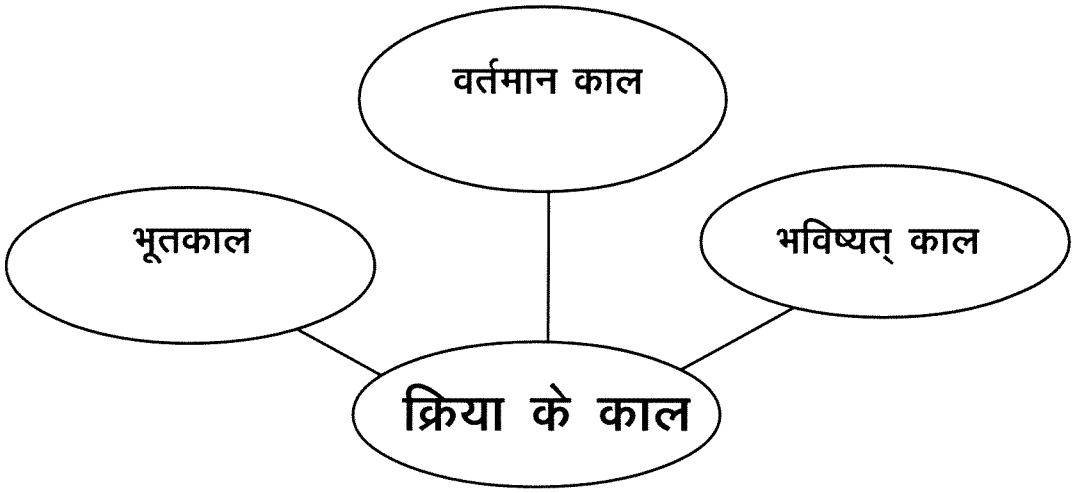

1. **भूतकाल :** क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया बीते हुए समय में हो चुकी है उसे भूतकाल कहते हैं।
2. **'वर्तमान काल' :** क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया इस समय हो रही है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।
3. **'भविष्यत् काल' :** क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया आने वाले समय में होगी, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

उदाहरण :

	भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्यत् काल
(क)	हम विद्यालय गए।	हम विद्यालय जाते हैं।	हम विद्यालय जाएँगे।
(ख)	राम ने रोटी खाई।	राम रोटी खा रहा है।	राम रोटी खाएगा।
(ग)	वर्षा हुई।	वर्षा हो रही है।	वर्षा होगी।

अभ्यास कार्य

प्रश्न–1. इन वाक्यों में क्रिया रेखांकित कर उनके काल लिखें।

(क) कल हम ताजमहल देखने जाएँगे। .....

(ख) गुब्बारा सौ मीटर की ऊँचाई तक गया। .....

(ग) शेर हिरण के पीछे भाग रहा है। .....

(घ) व्यापारी जान बचाकर वहाँ से भागा। .....

(ङ) हम आज नाटक देखेंगे। .....

प्रश्न–2. निम्नलिखित क्रियाओं को काल के अनुसार उचित स्थान में लिखिए।

खाएगा, सोचा, नाचेगी, जा रहा है, खेलेंगे, लिखा, रो रही है, सो रही थी, पढ़ रहे हैं

भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्यत् काल
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

प्रश्न–3. वाक्यों को निर्देशानुसार बदलकर दोबारा लिखिए।

(क) निमिश भोजन कर रहा है। (भूतकाल)

.....

(ख) छाया अपनी सखी के साथ खेल रही थी। (भविष्यत् काल)

.....

(ग) नमन को उसके चाचा जी ने उपहार दिया। (वर्तमान काल)

.....

(घ) विनीत समय पर विद्यालय पहुँचेगा। (भूतकाल)

.....

(ङ) अध्यापिका स्वामी विवेकानंद के बारे में बता रही हैं। (भविष्यत् काल)

.....

(च) रूपा छत पर बैठकर पढ़ रही थी। (वर्तमान काल)

.....

(छ) वह बहुत परिश्रम करता था। (भविष्यत् काल)

.....

(ज) भारत बंद के कारण कल बाज़ार बंद थे। (भविष्यत् काल)

.....

बरतनों की मौत (अपठित गद्यांश)

मुल्ला नसरूद्दीन बड़े मज़ाकिया स्वभाव के इनसान थे। गरीबी में भी खुश रहते थे और अपनी मज़ेदार बातों, हाज़िरजवाबी और होशियारी से सबको हँसाते रहते थे।

एक बार की बात है। मुल्ला नसरूद्दीन के एक पड़ोसी के घर दावत थी। पड़ोसी खाना बनाने के लिए कुछ बरतन मुल्ला के घर से माँग कर ले गया। दूसरे दिन वह बरतन वापिस करने आया।

उन बरतनों में मुल्ला के बरतनों से छोटा एक बरतन फ़ालतू था। मुल्ला ने देखा तो पड़ोसी से कहा, "भाई, यह तो मेरा बरतन नहीं है।"

पड़ोसी ने कहा, "मुल्ला साहब, बात दरअसल यह है कि जब आपके बरतन मेरे यहाँ रहे तो उन्हीं में से किसी ने यह बच्चा दिया है। अब आपके बरतनों का बच्चा है। इसलिए आपको लौटा रहा हूँ।

मुल्ला ने कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप सारे बरतन लेकर रख लिए।

कुछ दिनों बाद मुल्ला के यहाँ दावत का मौका आया। उन्होंने अपने पड़ोसी के कुछ बरतन उधार लिए। लेकिन कई दिन बीत गए, मुल्ला ने पड़ोसी के बरतन वापिस न लौटाए।

पड़ोसी ने काफ़ी दिन इंतजार किया। आखिरकार एक दिन वह खुद मुल्ला के घर पहुँच गया और बोला, "मेरे बरतन ....."

मुल्ला ने बड़ी उदास आवाज़ में कहा, "भाई, मुझे बड़ा अफ़सोस है। आपके बरतनों की मौत हो गई। भला होनी को कौन टाल सकता है।"

अभ्यास

1. उत्तर लिखिए।

(क) मुल्ला किस तरह के इनसान थे?

.....

.....

.....

.....

(ख) फ़ालतू बरतन देखकर मुल्ला ने क्या कहा?

.....

.....

.....

.....

(ग) पड़ोसी ने क्या जवाब दिया?

.....

.....

.....

.....

(घ) मुल्ला ने पड़ोसी के बरतन नहीं लौटाने का क्या कारण बताया?

.....

.....

.....

.....

लालची किसान (अपठित गद्यांश)

'किसी गाँव में एक किसान रहता था। वह धन का अत्यंत लोभी था। यद्यपि उसके पास पर्याप्त धन था, परंतु वह अधिक से अधिक धन इकट्ठा करना चाहता था। एक दिन उस गाँव में एक महात्मा जी आए। किसान ने महात्मा जी की बहुत सेवा की। उस गाँव से विदा होते समय महात्मा जी ने किसान से कहा, "बेटा! तुमने मेरी बहुत सेवा की है। यदि तुम्हारी कुछ इच्छा हो, तो बताओ।"

किसान ने हाथ जोड़कर कहा, "महात्मा जी! मेरे पास धन का बड़ा अभाव है। कुछ ऐसा कीजिए जिससे मुझे कुछ धन प्राप्त हो जाए।"

"ठीक है। मैं तुम्हें एक मुरगी देता हूँ।" महात्मा जी ने एक मुरगी देते हुए कहा, "यह मुरगी सोने का अंडा रोज़ देती है। इसके अंडों से जल्दी ही तुम धनी बन जाओगे।"

1. उत्तर लिखिए।

(क) किसान कैसे स्वभाव का था?

.....

.....

(ख) किसान क्या चाहता था?

.....

.....

(ग) महात्मा जी ने किसान से क्या कहा?

.....

.....

.....

(घ) किसान ने महात्मा जी से क्या कहा?

.....

.....

.....

(ङ) महात्मा जी ने मुरगी देते हुए किसान से क्या कहा?

.....

.....

.....

दिसंबर

दोहे और उनके अर्थ

दोहा– **1. तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।**

कहि रहीम परकाज हित, संपति-संचहिं सुजान।। *–रहीम*

अर्थ– वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते हैं। सरोवर अपना जल स्वयं नहीं पीता है। इसी तरह सज्जन दूसरों के कल्याण के लिए ही संपत्ति जोड़ते हैं अर्थात अपनी संपत्ति दूसरों की भलाई में खर्च करते हैं।

सीख/भावार्थ – सज्जनों के सभी कार्य परोपकार के लिए होते हैं।

दोहा–2. काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।

पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब्ब।। *–कबीर*

अर्थ– आलस्य के विरुद्ध चेतावनी देनेवाले इस दोहे में यह सीख दी गई है कि समय अनमोल है। इसे व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। जो कार्य आज हो सकता है उसे कल पर नहीं टालना चाहिए। पलभर में यदि प्रलय अर्थात विपत्ति आ जाए तो सारा कार्य अधूरा रह जाएगा।

सीख/भावार्थ – समय अमूल्य है, इसे खोना नहीं चाहिए।

दोहा–3. कन-कन जोरे मन जुरै, खाते निबरै सोय।

बूँद-बूँद सों घट भरे, टपकत रीतौ होय।। *–वृंद*

अर्थ– एक–एक दाना जोड़ने से मनभर (पुराना तौल–40 सेर) अनाज इकट्ठा हो जाता है और खाते–खाते सारा अन्न समाप्त हो जाता है। जैसे – बूँद बूँद जल से घड़ा भर जाता है पर बूँद–बूँद टपकने से सारा घड़ा खाली हो जाता है। इससे यह सीख मिलती है कि मनुष्य में जोड़ने की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

सीख/भावार्थ – मनुष्य में जोड़ने की प्रवृत्ति भी आवश्यक है।

दोहा–4. भले-बुरे सब एक से, ज्यों लौं बोलत नाहिं।
जान परत है काक-पिक, रितु बसंत के माहिं।। *–वृंद*

अर्थ– वाणी का महत्त्व बताते हुए कहा गया है कि जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक अच्छे, बुरे दोनों एक समान दिखाई देते हैं। जैसे – कौआ और कोयल दोनों देखने में एक – से लगते हैं परन्तु बसंत ऋतु में जब दानों बोलते हैं तभी दोनों में अंतर पता चलता है।

सीख/भावार्थ – वाणी से ही मनुष्य के गुणों की पहचान होती है।

दोहा–5. अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।। *–कबीर*

अर्थ– बहुत अधिक बोलना ठीक नहीं होता, बहुत अधिक चुप रहना भी उचित नहीं है। बहुत अधिक बारिश का होना भी ठीक नहीं होता तथा बहुत अधिक धूप भी अच्छी नहीं होती। सभी चीजें सही अनुपात में ही ठीक होती हैं।

सीख/भावार्थ – किसी भी चीज़ की अति नहीं होनी चाहिए।

दोहा–6. विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावे कौन।
बिना डुलाए ना मिले, ज्यों पंखा की पौन।। *–वृंद*

अर्थ– इस दोहे में परिश्रम के महत्त्व को बड़े ढंग से समझाया गया है। जिस प्रकार बिना हिलाए अर्थात बिना मेहनत किए पंखे (हाथ का पंखा) से हवा प्राप्त नहीं होती, उसी प्रकार बिना परिश्रम किए विद्या रूपी धन प्राप्त नहीं किया जा सकता।

सीख/भावार्थ – परिश्रम से ही विद्या प्राप्त होती है।

दोहा–7. माखी गुड़ में गड़ि रही, पंख रह्यौ लपटाय।
हाथ मलै और सिर धुनै, लालच बुरी बलाय।। *–कबीर*

अर्थ लालच नहीं करना चाहिए यह बात इस दोहे में कही गई है। जैसे गुड़ खाते–खाते मक्खी उसमें धँस जाती है। उसके पंख गुड़ में चिपक जाते है और वह पछताती है। वहाँ से छूटने की कोशिश करती है परंतु उड़ नहीं पाती और उसमें चिपककर मर जाती है।

सीख/भावार्थ – लालच करना बहुत बुरी बात है।

दोहे (पठित काव्यांश)

प्रश्न–1. दिए गए दोहों में से प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब्ब।।

भले–बुरे सब एक से, ज्यों लौं बोलत नाहिं।
जान परत है काक–पिक, रितु बसंत के माहिं।।

क) आज का काम कल पर क्यों नहीं छोड़ना चाहिए?

.....

.....

ख) मनुष्य की बोली से उसके गुणों का पता कैसे चलता है?

.....

.....

ग) काक और पिक की बोली में क्या अंतर है?

.....

.....

घ) उल्टे अर्थ वाले शब्द चुनकर लिखिए-

पतझड़– ..... बुरा– .....

ङ) दिए गए दोहों के कवियों के नाम लिखिए-

.....

.....

प्रश्न–2. वाक्य बनाइए -

(i) बूँद – .....

.....

(ii) अति – .....

.....

(iii) लालच – .....

.....

(iv) संपत्ति – .....

.....

(v) विद्या – .....

.....

प्रश्न–3. शब्दों के अर्थ लिखिए :-

(i) हित – ..... (iv) माहिं – .....

(ii) रितु – ..... (v) परत – .....

(iii) पियत – .....

प्रश्न–4. रहीम दास, कबीर दास, वृंद कवियों के बारे में पता करिए और चित्र सहित उनका जीवन परिचय दीजिए।

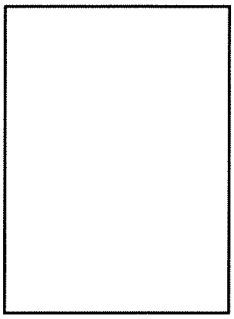

.....

.....

.....

.....

.....

.....

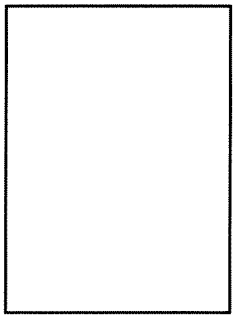

.....

.....

.....

.....

.....

.....

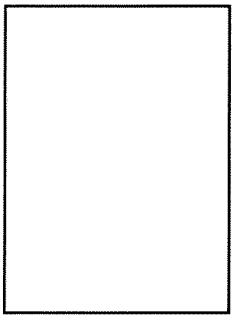

.....

.....

.....

.....

.....

.....

क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया के स्थान, काल, रीति, परिमाण संबंधी विशेषताएँ बताते हैं उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे - धीरे-धीरे, ऊपर, रात-भर आदि।

प्रश्न–1. नीचे दिए गए वाक्यों में से क्रियाविशेषण शब्द छाँटकर लिखिए।

		क्रियाविशेषण
1.	खरगोश तेज़ भागता है।	.....
2.	मैं मुंबई कल जाऊँगी।	.....
3.	मैदान में बच्चे अच्छा खेले।	.....
4.	वह ज़ोर से हँसा।	.....
5.	लता मंगेशकर बहुत मीठा गाती हैं।	.....
6.	कछुवा धीरे–धीरे चलता है।	.....

प्रश्न–2. उचित क्रियाविशेषण शब्दों से निम्नलिखित वाक्य पूरे कीजिए।

1. बस में आग लगने पर सब लोग ..... उतर गए।
2. धूप निकलते–निकलते ..... बारिश होने लगी।
3. चीता सबसे ..... दौड़ता है।
4. राधा ..... से निकल गई।
5. मैं ..... सोकर उठता हूँ।
6. बंदर ..... बैठा है।

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं।

प्रश्न–3. क्रिया विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए–

1. चबा–चबाकर खाना खाओ।
2. वह आदमी ज़ोर से चिल्ला रहा है।
3. अचानक बारिश होने लगी।
4. इधर बैठो।
5. ऊपर चढ़ो।
6. तुम बहुत मीठा गाते हो।
7. पानी नीचे गिर गया।
8. धीरे–धीरे चाँद आसमान में निकल आया।
9. चोर चुपके से घर में घुसा।
10. मज़दूर दिनभर काम करता रहा।
11. घोड़ा तेज़ी से आगे बढ़ गया।
12. इधर–उधर घूमना बंद करके कुछ पढ़ाई कर लो।
13. परीक्षा में मेरे सबसे अधिक अंक आए।
14. आपको किधर जाना है?

उपसर्ग

नए शब्दों की रचना के लिए शब्दों के आरंभ में कुछ शब्दांश जोड़े जाते हैं, और ये शब्दों के अर्थ में विशेषता लाते हैं। ये शब्दांश ही उपसर्ग कहलाते हैं।
जैसे –

	उपसर्ग	मूल शब्द	=	नया शब्द
महेश हार गया।				
सुरेश ने प्रहार किया।	प्र	+ हार	=	प्रहार

यहाँ पहले वाक्य में 'हार' का अर्थ है हारना, परंतु, दूसरे वाक्य में 'प्र' लगाने से प्रहार बन जाने पर 'चोट करना' अर्थ बन जाता है। 'प्र' यहाँ उपसर्ग है।

उपसर्ग	**अर्थ**	**नए शब्द**
अ	अभाव	अदृश्य, असफल, अधर्म, अज्ञात अभाव, अपवित्र, असत्य, अकाल, अक्षर, अछूत, अचूक
अन्	अभाव	अनपढ़, अनेक, अनमोल, अनगिनत, अनावश्यक,
कु	बुरा, हीन	कुरूप, कुचाल, कुमार्ग, कुकर्म, कुशासन
प्र	आगे, ऊपर	प्रगति, प्रयत्न, प्रयोग, प्रबल, प्रकार, प्रहार
सु	अधिक	सुपुत्र, सुकर्म, सुगम सुकुमार, सुशिक्षित, सुफल
वि	उल्टा	विभाग, विज्ञान, विनम्र विमुख, वियोग
स	सहित	सपरिवार, सप्रेम, सपूत, सचेत
प्रति	प्रत्येक	प्रतिकूल, प्रतिक्षण, प्रतिदिन प्रतिरोध, प्रत्येक
ना	बिना	नालायक, नापसंद, नाउम्मीद
बे	बिना	बेइज्ज़त, बेईमान, बेअक्ल

प्रश्न–1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

क. शब्दों के ..... में कुछ शब्दांश जोड़े जाते हैं, उन्हें ..... कहते हैं।

ख. उपसर्ग ..... में जोड़े जाते हैं।

ग. उपसर्ग मूल शब्दों के ..... लगाए जाते हैं।

प्रश्न–2. प्रत्येक उपसर्ग से तीन-तीन शब्द बनाइए -

1. अन – ....

2. कु – ....

3. ना – ....

4. सु – ....

5. वि – ....

6. अ – ....

प्रश्न–3. उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग कीजिए -

1. प्रयत्न = ... + ...
2. बेअक्ल = ... + ...
3. नापसंद = ... + ...
4. विदेश = ... + ...
5. सुकुमार = ... + ...
6. अभाव = ... + ...
7. प्रत्येक = ... + ...
8. अनमोल = ... + ...
9. कुकर्म = ... + ...

प्रश्न–4. उपयुक्त उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए -

1. ..... + शिक्षा = ...
2. ..... + चेत = ...
3. ..... + ज्ञात = ...

4. ..... + रोध = ...

5. ..... + दृश्य = ...

6. ..... + कार = ...

7. ..... + पसंद = ...

8. ..... + जान = ...

9. ..... + ज्ञान = ...

10. ..... + योग = ...

प्रत्यय

इन शब्दों को देखिए–

खिलाड़ी, फलवाला

खेल + आड़ी, फल + वाला, आदि प्रत्यय लगाने से ये शब्द बने हैं।

नए शब्द बनाने के लिए शब्दों के अंत में जो शब्दांश जुड़कर अर्थ में विशेषता ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय		**नए शब्द**
ईय	–	भारतीय, जातीय, राष्ट्रीय
इक	–	सामाजिक, मासिक, वार्षिक
कार	–	साहित्यकार, कलाकार, शिल्पकार
आवट	–	बनावट, सजावट, मिलावट
आहट	–	घबराहट, चिल्लाहट, सकपकाहट
आई	–	लिखाई, पढ़ाई, कमाई
वा	–	बुलावा, दिखावा, चढ़ावा
दार	–	ईमानदार, किराएदार, लेनदार
ता	–	सुंदरता, वीरता, गुरुता
आऊ	–	कमाऊ, बिकाऊ, टिकाऊ

प्रश्न–1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

क) प्रत्यय शब्दों के ..... में लगाए जाते हैं।

ख) प्रत्यय शब्दों का अर्थ ..... देते हैं।

ग) शब्दों के अंत में जुड़कर प्रत्यय अर्थ में ..... लाते हैं।

प्रश्न–2. दिए गए शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग लिखिए -

			मूल शब्द	**प्रत्यय**
1.	सफ़ाई	=	.....	.....
2.	दैनिक	=	.....	.....
3.	सफलता	=	.....	.....
4.	शांतिहीन	=	.....	.....
5.	धार्मिक	=	.....	.....
6.	रुकावट	=	.....	.....

प्रश्न–3. प्रत्येक प्रत्यय से तीन-तीन शब्द बनाइए -

1.	वाला	=	.....,	.....,	सफ़ाईवाला
2.	आई	=	.....,	.....,	.....
3.	आहट	=	.....,	.....,	.....
4.	इक	=	.....,	.....,	.....
5.	वान	=	गुणवान	.....,	.....

6.	पन	=	.....,	बचपन	.....
7.	ई	=	.....,	.....,	.....
8.	ता	=	.....,	.....,	.....
9.	कार	=	.....,	.....,	.....
10.	ईय	=	.....,	.....,	.....

प्रश्न–4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1.	जान	+	.....	=	.....
2.	दूध	+	.....	=	.....
3.	लोभ	+	.....	=	.....
4.	पढ़	+	आकू	=	.....
5.	झाड़	+	.....	=	.....
6.	.....	+	आई	=	भलाई
7.	राष्ट्र	+	.....	=	.....
8.	.....	+	इक	=	.....
9.	कला	+	.....	=	.....
10.	गुरू	+	.....	=	.....

कहानी लेखन

शीर्षक .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

शिक्षा .....

.....

कहानी लेखन

नीचे कुछ चित्र तथा कहानी की मुख्य बातें दी गई हैं। इनकी सहायता से कहानी लिखिए तथा उसके नाम भी दीजिए।

शीर्षक .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

शिक्षा .....

.....

जनवरी

दो माताएँ (पठित गद्यांश)

प्रश्न–1. गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

असम के एक अनजान प्रदेश में पहाड़ की तलहटी में आदिवासियों का एक छोटा–सा गाँव है। गाँव का नाम है–हतिया। गाँव में शीत ऋतु की विदाई पर एक उत्सव बनाया जाता है। यह विचित्र उत्सव है उनका, बिलकुल अलग प्रकार का। पहाड़ के नीचे रंगीन किस्म के पत्थर से बनी एक खाई है। उसी खाई के निकट लकड़ी का सुंदर मंदिर है। मंदिर में कोई मूर्ति नहीं है, बल्कि दीवार और छतों पर खुदाई करके बनी छोटी–छोटी मूर्तियाँ उपस्थित हैं। हथिनी माँ के निकट बच्चा हाथी। माँ की गोद में छोटा बच्चा। पूजा जैसी कोई बात नहीं, बल्कि कतारों में माताएँ, लड़कियाँ, लड़के, बूढे, सभी दूध से भरे घड़े, डलियों में फल, केले के गुच्छे, मिट्टी की कुप्पियों में मधु ले–लेकर हाज़िर हो रहे थे। बाद में घंटे की ध्वनि पर गाते–बजाते उस सारी सामग्री को घने जंगल में रख आया गया। लौटकर लोग गाने – बजाने, नृत्य आदि में मस्त हो गए।

क) आदिवासियों का गाँव कहाँ स्थित था?

.....

.....

ख) मंदिर किसका बना हुआ था?

.....

.....

ग) मंदिर में पूजा करने के लिए आदिवासी जंगल में क्या-क्या रखते हैं?

.....

.....

घ) **दीवारों और छतों पर मूर्तियाँ कैसे बनाई गई थीं?**

.....

.....

ङ) **समान अर्थ वाले शब्द लिखिए–**

(i) सरदी – .....

(ii) नाच – .....

(iii) शहद – .....

(iv) पंक्ति – .....

प्रश्न–2. शब्दों के अर्थ लिखिए :-

(i) मौका – .....

(ii) जख्म – .....

(iii) स्थिर– .....

(iv) सामग्री –.....

(v) दंग – .....

प्रश्न–3. वाक्य बनाइए -

(i) किस्सा – .....

.....

(ii) ठिकाना – .....

.....

(iii) किस्म – .....

.....

(iv) विदाई – .....

.....

(v) अनुभव – .....

.....

प्रश्न–4. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 5–6 पंक्तियों में दीजिए -

जंगल पशु-पक्षियों का घर होता है। हमें उनका घर बचाने के लिए क्या-क्या उपाय करने चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अशुद्धि शोधन

भाषा अशुद्ध हो तो लोग हमारा मज़ाक उड़ाते हैं। ऐसे में हम बातचीत करने से डरने लगते हैं। अशुद्ध भाषा लिखने से परीक्षा में अंक भी कम मिलते हैं।

इन अशुद्धियों को आसानी से सुधारा जा सकता है। इसके लिए केवल अभ्यास की आवश्यकता है।

शब्दों की अशुद्धियाँ

नीचे दिए गए शुद्ध शब्दों का सही उच्चारण करने और लिखने का अभ्यास कीजिए–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
महीमा	महिमा	बर्षा	वर्षा	ग्रामीन	ग्रामीण
रितु	ऋतु	निशचित	निश्चित	विदूसी	विदुषी
विश	विष	भगत	भक्त	रतन	रत्न
आर्शीवाद	आशीर्वाद	गयान	ज्ञान	गिया	गया
पंडत	पंडित	महीला	महिला	सकूल	स्कूल
अज़ादी	आज़ादी	रिण	ऋण	सांति	शांति
क्रिपा	कृपा	प्रमात्मा	परमात्मा	दि्वितीय	द्वितीय
परनाम	प्रणाम	चरन	चरण	अरथ	अर्थ
नदि	नदी	अम्रत	अमृत	ब्रामहन	ब्राह्मण
श्रीमति	श्रीमती	मनोरर्थ	मनोरथ	तप्स्वी	तपस्वी
सन्मान	सम्मान	सदोपदेश	सदुपदेश	मुस्कान	मुसकान

अशुद्ध वाक्यों का शुद्ध रूप

कभी–कभी हम अशुद्ध वाक्यों का प्रयोग करते हैं। यदि हम व्याकरण के नियमों का पालन करें तो शुद्ध वाक्यों की रचना अथवा प्रयोग कोई कठिन कार्य नहीं है। हम प्रायः निम्नलिखित अशुद्धियाँ करते हैं–

	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1.	मेरे को घर जाना है।	मुझे घर जाना है।
2.	पुस्तक पर नहीं लिखो।	पुस्तक पर मत लिखो।
3.	मैं शुद्ध गाय का दूध पीता हूँ।	मैं गाय का शुद्ध दूध पीता हूँ।
4.	लड़का ने खाना नहीं खाया।	लड़के ने खाना नहीं खाया।
5.	सारा काम मैंने करा है।	सारा काम मैंने किया है।
6.	उसके मुँह से फूल गिरते हैं।	उसके मुँह से फूल झरते हैं।
7.	उसका प्राण निकल गया।	उसके प्राण निकल गए।
8.	अमन से जान–बूझकर भूल हो गई।	अमन से अनजाने में भूल हो गई।
9.	हमारे अध्यापक विदुषी हैं।	हमारे अध्यापक विद्वान है।
10.	कृपा आप ही उसे समझाने की कृपा करें।	कृपया आप ही उसे समझाएँ।
11.	आज सोमवार का दिन है।	आज सोमवार है।
12.	उसने लीची खाया।	उसने लीची खाई।
13.	मेरे को कुछ नहीं पता।	मुझे कुछ नहीं पता।
14.	उसने मुझको बोला था।	उसने मुझे कहा था।
15.	उसका बात मान लो।	उसकी बात मान लो।

16.	हम तुमसे बात करना चाहता हूँ।	मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।
17.	गाय घास चरता है।	गाय घास चरती है।
18.	माँ घर से बाहर गई हैं।	माँ बाहर गई हैं।
19.	तुम अच्छा काम की है।	तुमने अच्छा काम किया है।
20.	आप यहाँ बैठो।	आप यहाँ बैठिए।

प्रश्न–1. निम्नलिखित वाक्यों में जो शब्द अशुद्ध हैं उन्हें शुद्ध करके वाक्यों को फिर से लिखिए-

क) हमारा विद्यालय दशैरा अवकाश में एतिहासीक भरमण के लिए जा रहा है। कृपया इस भरमण में जाने कि अनुमती परदान करें।

.....

.....

ख) आधनिक यूग में टैलिवीजन मनोरन्जन का प्रमूख साघन बन चुका हे।

.....

.....

ग) कुछ विद्यार्थि कहानि सुनाने में बहूत निपूण होते हैं। उन्से कहानीयाँ सुनकर आनंद आ जाता है।

.....

.....

प्रश्न–2. वाक्य के शुद्ध रूप पर (✓) का चिह्न लगाइए-

क)	सबने मेरी प्रशंसा की।	सबों ने मेरी प्रशंसा की।
ख)	मैंने कल जाना है।	मुझे कल जाना है।
ग)	बच्चों को काटकर फल खिला दो	बच्चों को फल काटकर खिला दो।
घ)	मेरे माताजी आए।	मेरी माताजी आईं।
ङ)	हमारे दोनों मामे आए।	हमारे दोनों मामा आए।
च)	उसके पास अनेकों पुस्तकें हैं।	उसके पास अनेक पुस्तकें हैं।

प्रश्न–3. सही शब्द चुनकर पूरा वाक्य फिर से लिखिए-

क) पेड़ पर पक्षी **बैठा है/बेठा है।** .....

ख) उसने मुझे किताब **दिया/दी।** .....

ग) **मुझसे/मेरे से** पढ़ा नहीं जाता। .....

घ) **घर पर/घर में** सब कुशल है। .....

ङ) उस पर घड़ों पानी गिर **गया/पड़ गया।** .....

च) क्या यह संभव हो सकता **है/हैं?** .....

छ) उसने चार गरम–गरम **पूरियाँ खाईं/ पूरी खाई।** .....

पत्र लेखन

आप अपने विद्यालय में प्रतिदिन छुट्टी के बाद 'उमंग' के बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं। प्रधानाचार्या को पत्र लिखकर इसकी अनुमति माँगें।

सेवा में

_____

_____

_____

विषय _____

महोदया _____

_____

_____

_____

_____

सधन्यवाद

_____

_____

_____

कक्षा _____

दिनांक _____

दैनिक जागरण के संपादक को पत्र लिखकर अपनी लिखी कहानी छापने की प्रार्थना करें।

सेवा में

_____

_____

_____

विषय_____

महोदय

_____

_____

_____

_____

_____

_____

सधन्यवाद

भवदीय/भवदीया

_____

_____

फरवरी

समय बहुत मूल्यवान (पठित पद्यांश)

प्रश्न–1. दिए गए पद्यांश से प्रश्नों के उत्तर लिखो -

धन खो जाता, श्रम करने से फिर मनुष्य है पाता
स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर उपचारों से है बन जाता।
विद्या खो जाती, फिर भी पढ़ने से है आ जाती
लेकिन खो जाने से मिलती नहीं समय की थाती।
जीवनभर भटको, छानो, दुनिया का कोना–कोना
समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना।

क) कविता के कवि का नाम लिखिए।

.....

ख) किन–किन चीज़ों को खो देने के बाद वापस पाया जा सकता है?

.....

.....

ग) समय को व्यर्थ क्यों नहीं गँवाना चाहिए?

.....

.....

घ) पद्यांश से विलोम शब्द लिखिए–

i) मरण –..... ii) कम –.....

iii) मूल्यहीन –..... iv) बनना–.....

प्रश्न–2. शब्दों के अर्थ लिखिए–

i) क्षण –..... ii) नियम –.....

iii) सदा – ..... iv) ठुकराना–.....

प्रश्न–3. वाक्य बनाइए-

(i) व्यर्थ – .....

.....

(ii) विद्या – .....

.....

(iii) मूल्यवान – .....

.....

(iv) उपचार – .....

.....

(v) स्वास्थ्य – .....

.....

प्रश्न–4. एक बार गया हुआ समय वापस लौट कर नहीं आता। अपने विचार 5–6 पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अनुच्छेद लेखन

करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान

(परिश्रम का महत्त्व)

अनुच्छेद लेखन

जब मुझे एक छोटे बच्चे को संभालना पड़ा ....

विलोम शब्द

विलोम का अर्थ है विपरीत अर्थ वाला शब्द।

जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ प्रस्तुत करते हैं, वे विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहलाते हैं।

कुछ प्रमुख विलोम शब्द

प्रथम सत्र

1.	आदि	x	अंत	9.	श्वेत	x	श्याम
2.	एकता	x	अनेकता	10.	वीर	x	कायर
3.	उदय	x	अस्त	11.	गुण	x	दोष, अवगुण
4.	अपना	x	पराया	12.	आस्तिक	x	नास्तिक
5.	उन्नति	x	अवनति	13.	विद्वान	x	मूर्ख
6.	उत्तीर्ण	x	अनुत्तीर्ण	14.	जीवन	x	मरण
7.	रोगी	x	निरोगी	15.	प्रेम	x	घृणा
8.	सरल	x	कठिन				

द्वितीय सत्र

1.	सरस	x	नीरस	9.	वर	x	वधू
2.	मौखिक	x	लिखित	10.	शोक	x	हर्ष
3.	निकट	x	दूर	11.	क्रय	x	विक्रय
4.	पाप	x	पुण्य	12.	स्वतंत्र	x	परतंत्र
5.	अनुज	x	अग्रज	13.	स्वस्थ	x	अस्वस्थ
6.	प्राचीन	x	नवीन	14.	हिंसा	x	अहिंसा
7.	प्रकट	x	गुप्त	15.	दानव	x	मानव
8.	प्रशंसा	x	निंदा				

अभ्यास कार्य

क) विलोम शब्द लिखिए -

1.	उचित	x	.....	4.	मूर्ख	x	.....
2.	.....	x	सदुपयोग	5.	श्वेत	x	.....
3.	अज्ञान	x	.....	6.	.....	x	घृणा

ख) रेखांकित शब्दों के विलोम शब्दों द्वारा खाली स्थान भरिए-

1. विदेश जाने की बजाय हमें ..... में रहकर ही नाम कमाना चाहिए।
2. कहा जाता है कि स्वर्ग में देव रहते हैं और ..... में ..... रहते हैं।
3. मेरा विद्यालय उत्तर दिशा में है, पर मेरा घर ..... दिशा में हैं।
4. मोहन ने अपने पुराने खिलौने देकर ..... खिलौने खरीद लिए।
5. उसमें स्वार्थ नहीं है। वह ..... भाव से लोगों की सेवा करती है।

ग) सही विलोम शब्द छाँटकर लिखिए -

1.	रात	x	.....	(दिन, सुबह, प्रकाश)
2.	सुगंध	x	.....	(खुशबू, बदबू, दुर्गंध)
3.	मित्र	x	.....	(दुश्मन, दोस्त, शत्रु)
4.	आदर	x	.....	(सम्मान, निरादर, अपमान)
5.	स्वतंत्र	x	.....	(आज़ादी, परतंत्र, कैद)

घ) रमन ने विलोम शब्दों का प्रयोग कर अर्थ का अनर्थ कर दिया है। रेखांकित शब्दों का विलोम लिखकर उसकी सहायता करो।

1. सच बोलना <u>पाप</u> है।

.....

2. माता–पिता की सेवा करना ही हमारा <u>अधर्म</u> है।

.....

3. भारत में विभिन्न जातियों के लोग <u>अनेकता</u> से रहते हैं।

.....

4. आशा है कि आप सब <u>अकुशल</u> होंगे।

.....

5. हमें बड़ों का <u>अनादर</u> करना चाहिए।

.....

मुहावरे

अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ देने वाले वाक्यांश मुहावरे कहलाते हैं। जैसे–

	मुहावरा	अर्थ
1.	आसमान सिर पर उठाना	बहुत शोर करना
2.	ईद का चाँद होना	बहुत दिनों बाद दिखाई देना
3.	आँखों का तारा	बहुत प्यारा
4.	पेट में चूहे कूदना	भूख लगना

वाक्य प्रयोग

1. अध्यापक के न होने के कारण बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।
2. अरे ! तुम तो दिखाई ही नहीं देते, बिल्कुल ईद का चाँद हो गए हो।
3. मैं अपनी माँ की आँखों का तारा हूँ।
4. मैं सुबह से पढ़ रहा हूँ, अब तो मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

	मुहावरा	अर्थ	वाक्य - प्रयोग
1.	**अंधे की लाठी**	बेसहारे का एकमात्र सहारा	श्रवण अपने बूढ़े माता–पिता के लिए अंधे की लाठी था।
2.	**अपना उल्लू सीधा करना**	अपना मतलब निकालना	राहुल जैसे मित्र का क्या लाभ, वह तो बस अपना ही उल्लू सीधा करना जानता है।

3.	**आँखें दिखाना**	क्रोध प्रकट करना	मुझे क्यों आँखें दिखा रहे हो, मैं निर्दोष हूँ।
4.	**आँखों में धूल झोंकना**	धोखा देना	बड़े से बड़ा अपराधी भी पुलिस की आँखों में धूल नहीं झोंक सकता।
5.	**आँखों का तारा**	बहुत प्यारा	सभी बच्चे अपने माता–पिता की आँखों के तारे होते हैं।
6.	**सिर-आँखों पर बिठाना**	बहुत प्यार और सम्मान दिखाना	नेहा कक्षा में प्रथम आई तो सबने उसे सिर– आँखों पर बिठा लिया।
7.	**कानों पर जूँ न रेंगना**	ध्यान न देना	कार्टून चैनल देखने के लिए माँ ने कितना मना किया मगर ऋषभ के कानों पर जूँ तक न रेंगी।
8.	**घी के दिये जलाना**	खुशियाँ मनाना	सारे विद्यालय में सुमित के प्रथम आने पर उसकी बहन ने घी के दीए जलाए।
9.	**नौ-दो ग्यारह होना**	भाग जाना	पुलिस की जीप देखते ही चोर नौ–दो ग्यारह हो गए।
10.	**चेहरा खिल उठना**	प्रसन्न होना	कहानी लेखन प्रतियोगिता में प्रथम आने पर पारूल का चेहरा खिल उठा।

कुछ और मुहावरे

प्रथम सत्र

	मुहावरा	अर्थ
1.	हाथ–पाँव मारना	प्रयत्न करना
2.	हवा से बातें करना	बहुत तेज़ भागना
3.	दाल में काला होना	कुछ गड़बड़ होना
4.	मुँह में पानी भर आना	ललचा जाना
5.	घाव पर नमक छिड़कना	दुखी को और दुखी करा
6.	पानी–पानी हो जाना	लज्जित होना
7.	बाएँ हाथ का खेल	आसान कार्य
8.	बाल–बाल बचना	मुसीबत से बचाव होना
9.	अपना उल्लू सीधा करना	मतलब निकालना
10.	एड़ी चोटी का ज़ोर लगाना	बहुत परिश्रम करना

द्‌वितीय सत्र

1.	खाक में मिलाना	बरबाद करना
2.	फूला ना समाना	अत्यंत प्रसन्न होना
3.	हाथ मलना	पछताना
4.	फूटी आँख न भाना	बिलकुल अच्छा न लगना
5.	नानी याद आना	बहुत संकट में पड़ना
6.	थाली का बैंगन	अस्थिर विचार वाला
7.	डंका बजाना	प्रचार करना
8.	जलती आग में घी डालना	लड़ाई या क्रोध को भड़काना
9.	छाती ठोककर कहना	दावे से कहना
10.	चंपत होना	भाग जाना

अभ्यास कार्य

प्रश्न–1. नीचे दिए गए मुहावरों को उनके अर्थ से मिलाइए:

(क)	अपना उल्लू सीधा करना	बहुत प्रसन्न होना
(ख)	कान भरना	भाग जाना
(ग)	घी के दिये जलाना	बहुत प्यारा
(घ)	आँखों का तारा	झूठी शिकायत करना
(ङ)	नौ–दो ग्यारह होना	अपना मतलब निकालना

प्रश्न–2. मुहावरों का प्रयोग वाक्य के अनुसार कीजिए -

(फूला न समाना, पानी-पानी हो जाना, चंपत होना)

क) कक्षा में प्रथम आने पर दीपा ..... ।

ख) चोर चोरी का सामान लेकर तुरंत ही ..... ।

ग) माँ ने दिव्यांश को जब दोस्तों के सामने डाँट दिया तो वह .... ।

पर्यायवाची शब्द

जो शब्द समान अर्थ बताते हैं, वे पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहलाते हैं।

पर्यायवाची शब्द

प्रथम सत्र

1.	अग्नि	–	आग, पावक, अनल
2.	अंधकार	–	अंधेरा, तम, तिमिर
3.	आदर	–	सम्मान, मान, प्रतिष्ठा
4.	इच्छा	–	कामना, चाह, अभिलाषा
5.	नदी	–	सरिता, तटिनी, तरंगिणी
6.	निर्धन	–	गरीब, कंगाल, कंगला
7.	शत्रु	–	दुश्मन, रिपु, वैरी
8.	दुख	–	कष्ट, व्यथा, विपत्ति
9.	मित्र	–	सखा, दोस्त, साथी
10.	पक्षी	–	खग, विह्ग, नभचर

द्वितीय सत्र

1.	अमृत	–	पीयूष, सुधा, अमिय
2.	कपड़ा	–	वस्त्र, वसन, चीर, अंबर
3.	गंगा	–	सुरसरि, देवनदी, जाह्नवी
4.	वन	–	जंगल, कानन, विपिन
5.	दिन	–	दिवस, वार, वासर
6.	शरीर	–	तन, बदन, काया
7.	बिजली	–	चपला, दामिनी, विद्युत
8.	सुबह	–	प्रभात, सवेरा, प्रातः
9.	फूल	–	पुष्प, कुसुम, सुमन
10.	बेटी	–	पुत्री, सुता, तनया

अभ्यास कार्य

1. उचित समानार्थी शब्द चुनकर खाली स्थान भरें -

1. आदर ..... (मान, स्वागत, प्रेम)
2. शत्रु ..... (अतिथि, रिपु, संबंधी)
3. अमृत ..... (भाई, सुधा, पानी)
4. इच्छा ..... (व्यवहार, कामना, बड़ाई)
5. कपड़ा ..... (वसन, नीर, सरिता)
6. पक्षी ..... (विहग, शशि, ईश)

2. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

1. कपड़ा ....
2. पक्षी ....
3. बेटी ....
4. नदी ....
5. शत्रु ....

चित्र-वर्णन

चित्र वर्णन एक ऐसी कला है जिसमें मन के भाव प्रकट होते हैं। चित्र को देखकर आपके मन मे जो भाव उठते हैं, उन्हें आप लिखकर प्रकट करते हैं यही चित्र वर्णन कहलाता है।

इसको बनाने के लिए अपनी जितनी बुद्धि, कल्पना और भावों का प्रयोग किया जाता है चित्र वर्णन उतना ही सुंदर उभरकर सामने आता है।

चित्र-वर्णन में ध्यान देने योग्य बातें।

- चित्र को देखकर सबसे पहले उसका शीर्षक तय करना चाहिए।
- चित्र को ध्यान से देखें और उसका वर्णन अपने शब्दों में करिए।
- पहला वाक्य ऐसा होना चाहिए जो चित्र के बारे में जिज्ञासा उत्पन्न करें।
- चित्र में दिए गए सभी दृश्यों, व्यक्तियों और वस्तुओं का वर्णन अवश्य करिए।
- चित्र–वर्णन रोचक और लुभावना होना चाहिए।

चित्र वर्णन

चित्र देखकर उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

संवाद-लेखन

संवाद का अर्थ है बातचीत। एक–दो व्यक्तियों के साथ हुई बातचीत ही असली बातचीत होती है, क्योंकि इसी में अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचाई जा सकती है। इसमें एक कहता है, दूसरा सुनता है, फिर दूसरा कहता और पहला सुनता है। इस प्रकार बातचीत का सिलसिला निरंतर आगे बढ़ता रहता है।

संवाद के विषय में ध्यान रखने योग्य बातें।

- संवाद विषय और भावों के अनुकूल होना चाहिए।
- संवाद में उचित संबोधन एवं अभिवादन का प्रयोग करना चाहिए।
- उम्र का ध्यान रखना चाहिए मर्यादा एवं सम्मान को बनाए रखना चाहिए।
- बातचीत अवसर के अनुकूल होनी चाहिए।
- बातचीत में बनावटीपन नहीं होना चाहिए। सोच–समझकर अपनी बात कहनी चाहिए।
- संबंधो की सुगंध बातचीत में होनी चाहिए।
- बातचीत भाषण नहीं है इसलिए सबको बोलने का अवसर मिलना चाहिए।

एक संवाद

उत्सव : हैलो! अविरल कैसे हो?

अविरल : आओ उत्सव! आओ बैठो।

उत्सव : क्या पढ़ाई कर रहे थे?

अविरल : नहीं, कल एक प्रतियोगिता है न, उसी की तैयारी कर रहा था।

उत्सव : अविरल एक बात कहूँ, तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा।

अविरल : नहीं, नहीं, बोलो।

उत्सव : तुम मंच पर बोलते तो बहुत अच्छा हो, पर जब तुम खड़े होते हो तो एक पैर पर सारा बल देखकर खड़े होते हो। यह देखने में अच्छा नहीं लगता।

अविरल : धन्यवाद उत्सव! मैंने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था।

उत्सव : मेरा ऐसा कहना तुम्हें ख़राब तो नहीं लगा न।

अविरल : अरे नहीं नहीं। बल्कि मुझे खुशी हुई कि तुमने अपना समझकर मुझे मेरी गलती बताई।

अभ्यास–

1. दो दोस्तों के बीच मनपसंद जगह के बारे मे संवाद लिखिए।

2. भाई–भाई के बीच रक्षाबंधन पर हुए संवाद को लिखिए।

3. अपनी अध्यापिका और आपके बीच 'सत्य के महत्तव' पर हुए संवाद को लिखिए।

विज्ञापन - लेखन

आज का युग विज्ञापन का युग है। दूरदर्शन के कार्यक्रम हो, पत्र–पत्रिकाएँ हों या शहर की दीवारें हों सब तरफ़ विज्ञापन नज़र आते हैं।

विज्ञापन का उद्‌देश्य अपनी वस्तुओं को बेचने के लिए उनके बारे में जानकारी देते हुए उनका प्रचार करना है। विज्ञापनों को देखकर ही हमें नई–नई वस्तुओं के बारे में जानकारी मिलती है। वस्तुओं का चुनाव करने में मदद मिलती है, विज्ञापन हमारे मन को प्रभावित करते हैं।

विज्ञापन बनाते समय कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

- विज्ञापन के लिए बनाया गया चित्र–रंगीन, स्पष्ट एवं आकर्षक होना चाहिए।
- वस्तुओं के गुणों के बारे में सही जानकारी देनी चाहिए।
- बढ़ा चढ़ा कर नहीं बताना चाहिए।
- लुभावने दृश्यों द्‌वारा गुमराह नहीं करना चाहिए।
- विज्ञापन इतना आकर्षक होना चाहिए कि ग्राहक उसे खरीदने के लिए तैयार हो जाए।

अभ्यास

- 'संस्कृति स्कूल' के मेले के लिए विज्ञापन बनाइए।
- 'लूम बैंडस' 'पेपर कटिंग' से बनाई गई चीज़ों का विज्ञापन बनाइए।
- दीपावली पर बनाए गए दीयों और मोमबत्तियों का विज्ञापन बनाइए।
- अपने द्‌वारा बनाई गई किसी चीज़ का विज्ञापन बनाइए।

आशुभाषण (Just a Minute)

आशुभाषण एक प्रकार का भाषण है, जिसमें विषय तत्काल दिया जाता है और वक्ता के पास एक से दो मिनट तक का समय बोलने के लिए होता है।

आशुभाषण बोलते समय निम्न नियमों का ध्यान रखना चाहिए। जैसे–

1. वक्ता को अपने खड़े रहने के तरीके पर ध्यान देना चाहिए। बोलते समय हिलना–डुलना नहीं चाहिए तथा सबकी तरफ़ देखकर बोलना चाहिए।
2. वक्ता को बोलने से पहले अपनी अध्यापिका और मित्रों को संबोधित करना चाहिए तथा समाप्ति के बाद धन्यवाद अवश्य बोलना चाहिए।
3. आरंभ में स्वयं और विषय के बारे में बताना भी आवश्यक है।
4. वक्ता को ध्यान रखना चाहिए कि वह इतना तेज़ बोले कि सभी उसे आसानी से सुन सकें।
5. वक्ता को अपने विचारों को क्रमबद्ध करके प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए।
6. वक्ता में आत्मविश्वास, धैर्य, विविध विषयों का ज्ञान, तुरंत सोचने की क्षमता आदि गुणों का होना भी आवश्यक है।
7. वक्ता को विषय मिलते ही, तुरंत उस पर विचार करना आरंभ कर देना चाहिए और विषय को कुछ मुख्य बिंदुओं में बाँटकर बोलना चाहिए।
8. अगर उपर्युक्त बिंदुओं पर ध्यान दिया जाए तो आशुभाषण का प्रस्तुतिकरण आसान हो जाएगा।

आइए! निम्न बिंदुओं पर एक मिनट के लिए बोलकर देखें-

- बारिश के मौसम का मज़ा।
- रक्षाबंधन
- अगर मैं देश का प्रधानमंत्री होता/होती.....।
- अगर मैं लड़का/लड़की होता/होती....।
- जब मैं चलते–चलते गड्ढे में गिर गया/गई.....।
- एक पेड़ की डाँट।
- अगर दुनिया से रंग गायब हो जाएँ.....।
- जब मैं मॉल में खो गई/गया....।
- अगर पढ़ाई न होती....।
- तारों की दुनिया।

अभ्यास – 1

कहानी लेखन- सूरज की ओर आइए, कहानी पूरी करें:-

बहुत पहले की बात है। एक आदमी ने सूरज की ओर जाना शुरु किया। उसे रास्ता नहीं पता था। रास्ते में अनेक कठिनाइयाँ आईं, लेकिन वह चलता रहा। जब सूरज डूब गया, वह वहीं रुक गया। घना जंगल उसके चारों ओर था। जंगल में उसने थोड़ी जगह साफ की और एक झोंपड़ी बना ली। उसके चारों ओर उसने केला, पपीता, सुपारी, नारियल आदि फलों के पौधें रौंप दिए। इनसे उसे पर्याप्त भोजन मिलने लगा। इस तरह समय बीतता रहा।

एक दिन गाँव के लोगों ने एक पक्षी को चोंच में मछली दबाकर पश्चिम की तरफ उड़ते देखा। लोगों को बड़ा आश्चर्य .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास – 2

चित्र लेखन

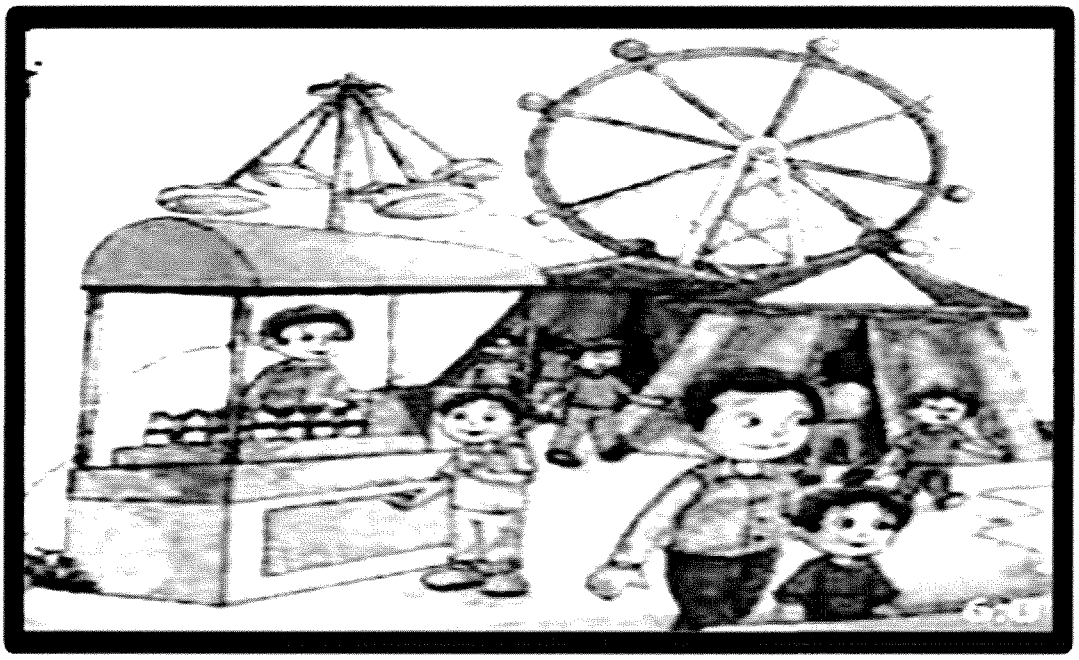

यह एक मेले का चित्र है। यहाँ पर .....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास – 3

दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए:–

1. अभियान .....

.....

2. उपयोग .....

.....

3. सामग्री .....

.....

4. संग्रह .....

.....

5. आविष्कार .....

.....

6. कारखाने .....

.....

7. पराधीन .....

.....

8. शब्दकोष .....

.....

9. प्रशंसा .....

.....

10. बुज़र्ग .....

.....

अभ्यास – 4

अनुच्छेद लेखन

आइए संकेत बिंदुओं (guidelines) के अनुसार लिखें:–

सबको भाए मधुर वाण

संकेत बिंदू:–

- मधुर वाणी सबको प्रिय
- मधुर वाणी एक औषधि/दवा
- मधुरवाणी का प्रभाव
- मधुर वाणी का महत्तव

कृपया यहाँ से शुरु करिए:–

मधुर वाणी की महत्ता प्रकट करने वाला एक दोहा है

कोयल काको दुख हरे, कागा काको देय। मीठे वचन सुनाए के, जग अपनो करि लेय।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास – 5 अपठित गद्यांश

पुरुष दिन रात मेहनत करते हैं। वे रात में सोते हैं और आराम करते हैं। रात सोने का सबसे अच्छा समय है। एक स्वस्थ आदमी रात में 9 बजे बिस्तर पर जाता है और सुबह 5 बजे उठता है। वह आठ घंटे सोता है। स्वस्थ पुरुषों की तुलना में बच्चों और बीमार लोगों को अधिक नींद की आवश्यकता होती है। वे दिन के समय में भी कुछ घंटों के लिए सोते हैं। हमारे घर में, मेरी माँ सुबह बहुत जल्दी उठ जाती हैं।

''बिस्तर से जल्दी उठना और जल्दी उठना, एक आदमी को स्वस्थ, धनवान और बुद्धिमान बनाता है।''

क. प्रत्येक कथन के लिए सही या गलत लिखिए:

1. स्वस्थ पुरुष दिन के समय में सोते हैं। ( )

2. स्वस्थ पुरुषों की तुलना में बच्चों और बीमार लोगों का अधिक नींद की आवश्यकता होती है। ( )

ख. निम्नलिखित के विपरीत अर्थ के शब्दों को लिखिए:

आदमी, दिन, बीमार .....

.....

घ. निम्निलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. नींद के लिए सबसे अच्छा समय कौन–सा है?

.....

2. स्वस्थ आदमी बिस्तर पर कब जाता है?

.....

अभ्यास – 6 अपठित गद्यांश

गद्यांश पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अचला और अखिल पिताजी के साथ चिड़ियाघर की सैर करने निकले थे इसलिए दोनों बहुत खुश थे। चलते–चलते पिताजी ने दोनों से प्रश्न किया–''बताओ, सबसे ऊँचा जानवर कौन–सा होता है? अचला झट से बोल उठी–''हाथी।'' अखिल ने कहा –''ऊँचा।''

''नहीं, इन दोनों से भी एक ऊँचा जानवर होता है जिसे आज हम देखेंगे। इसकी ऊँचाई 20 फुट तक होती है। यह ऊँचाई ऊँट और हाथी की ऊँचाई से लगभग दोगुनी है। पिताजी ने बताया। दोनों ने एक साथ प्रश्न किया, ''इस जानवर का नाम तो बताइए।'' वे उन्हें एक बड़े बाड़े के निकट ले गए और वहाँ खड़े जानवर को दिखाते हुए बोले–इसका नाम है जिराफ़।

अचला बोली, ''पिताजी! क्या ये हमारे देश का जानवर है? इसके बारे में कुछ बताइए।''

पिताजी ने बताया, ''यह जानवर अफ़्रीका में पाया जाता है। यह बहुत सीधा पशु है। कभी किसी को सताता नहीं इसकी गर्दन बहुत लंबी होती है इसलिए अपने शत्रु को दूर से ही देख लेता है और सुरक्षित स्थान में दौड़ जाता है। यह दौड़ता भी बहुत तेज़ है। रंग–रुप में भी यह सुंदर होता हे। इसके जैसी सुंदर आँखें तो शायद ही किसी जानवर की हो।''

क. अचला और अखिल खुश क्यों थे?

.....

.....

ख. जिराफ़ ऊँचाई लगभग कितनी होती है?

.....

.....

ग. पिताजी ने जिराफ़ की क्या विशेषताएँ बताई?

.....

.....

घ. जिराफ़ कहाँ पाया जाता है?

.....

.....

ङ समान अर्थ वाले शब्द गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए–

पशु – दुश्मन –

खूबसूरत – जगह –

अभ्यास – 7 अपठित गद्यांश

पुराने जमाने में राजा के दरबार में ऐसे लोग भी होते थे जो अपनी बातों और हाजिरजवाबी से लोगों का मनोरंजन किया करते थे। उन्हें 'विदूषक' कहते थे। तेनालीरामन भी एक विदूषक था। 'तेनाली' गाँव का रहने वाला 'रामन' बुद्धिमान, चतुर व शब्दों का जादूगर था। वह हर बात का विचित्र अर्थ निकाल कर सब को चकित कर देता था। लोग उसकी प्रशंसा में वाह–वाह करते न थकते थे। तेनालीरामन राजा कृष्णदेव के दरबार में एक विदूषक था। रामन का नाम तेनालीरामन रख दिया गया था। वह समय–समय पर अपनी हाजिर–जवाबी से राजा को खुश रखता था। उसके बारे में बहुत–सी कहानियाँ प्रसिद्ध हैं।

राजा कृष्णदेव अपनी प्रजा का हाल–चाल पूछने राज्य के विभिन्न गाँवों में जाया करते थे। उनके दरबारी उन्हें हमेशा उस गाँव में ले कर जाते जहाँ सब ठीक–ठाक होता। इसका राजा को अपने राज्य के असली हालात का पता न चल पाता था। एक बार ऐसे ही एक के राजा सोच न पा रहे थे कि कहाँ जाया जाए क्योंकि सब दरबारी उन्हें अपने–अपने से जाना चाहते थे।

तभी तेनालीराम ने राजा से कहा कि "महाराज, आप उधर जाए जहाँ आपका हाथी आपको लेकर जाए।" राजा तेनालीराम की बात मान गए। बहुत दूर चल कर हाथी पर सवार राजा एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ सभी बहुत गरीब थे। उनकी हालत देख राजा बहुत दुखी हुए। उन्होंने कहा कि "हाथी हमें सही स्थान पर ले आया है। इन लोगों को वास्तव में हमारी ज़रुरत है।"

महाराज की बात सुनते ही महावत ने अपनी चादर उतार फेंकी! सामने जानते हैं कौन खड़ा था? तेनालीरामन!

अभ्यास कार्य

पढ़े गए गद्यांश के आधार पर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'विदूषक' लोगों का मनोरंजन कैसे करते थे?

.....

.....

2. तेनालीरामन सबको किस तरह चकित कर देता था?

.....

.....

3. महाराज कृष्णदेव को अपने राज्य के असली हालात का पता क्यों नहीं चल पाता था?

.....

.....

II. समान अर्थ वाले शब्द लिखिए

चालाक ..... मशहूर .....

हैरानी ..... तारीफ .....

III. विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखिए

राजा ..... शहर .....

नए ..... सुखी .....

IV. वाक्या बनाओ

विभिन्न .....

प्रजा .....

अभ्यास – 8 अपठित गद्यांश

मनुष्य के पेय और खाद्य–पदार्थों में जितनी लोकप्रिय चाय है उतना और कुछ भी नहीं। विश्व के अलग–अलग देशों में चाय अलग–अलग रुपों में पी जाती है। जापान के सामाजिक जीवन में चाय का उच्च स्थान है। वहाँ चाय विशेष तौर–तरीके से बनाई और परोसी जाती है।

जापानियों के बाद चाय पीने में तिब्बत–वासी सबसे आगे हैं। वे लकड़ी के प्याले में मक्खन और नमक डालकर अनगिनत चाय के प्याले एक दिन में पी जाते हैं।

इंग्लैंड में भी चाय का अत्याधिक प्रचलन है। वहाँ चाय निश्चित समय पर ही पी जाती है। चाय के साथ सैंडविच, केक–पेस्ट्री, मिठाई–बिस्कुट आदि परोसे जाते हैं। सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्यिक चर्चाएँ करते–करते तो चाय का मज़ा दोगुना हो जाता है।

भारत को चाय की जन्मभूमि माना गया है। भारत से बौद्ध–धर्म के प्रचारकों द्वारा चाय पहले चीन पहुँची फिर वहाँ से जापान–इंग्लैंड। उन्नीसवीं सदी तक भारतवर्ष के जंगलों में अपने–आप ही, चाय के पौधे जंगलों पेड़ की भाँति उगते थे। अंग्रेज शासकों को 'कूचबिहार' और 'रंगपुर' में भी चाय के पौधे मिल फिर भारतवर्ष के गर्वनर के 'ईस्ट इंडिया कंपनी' द्वारा चाय के बाग लगवाए। आसाम में चाय की खेती विधि–पूर्वक होने लगी और दुनिया–भर में चाय पसंद की जाने लगी।

गद्यांश के आधार पर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. विश्व के कौन-कौन से देशों में चाय पीने का अधिक प्रचलन है?

.....

.....

2. तिब्बती लोग चाय कैसे पीते हैं?

.....

.....

3. इंग्लैंड में चाय के साथ क्या-क्या परोसा जाता है?

.....

.....

4. चाय भारत से चीन व जापान कैसे पहुँची?

.....

.....

5. समान अर्थ वाले शब्द गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए–

1. खास – .....
2. दुनिया – .....
3. जगह – .....
4. तरह – .....
5. ऊँचा – .....
6. बहुत ज़्यादा – .....

आओ कहानियाँ पढ़ें...

उपहार

भारत की एक रियासत के राजा ऐसे भी थे, जो अपना जन्मदिन प्रजा के साथ मनाया करते थे। वे उनके बीच जाकर गरीबों को अपने हाथों से फल, मिठाइयां, नए-नए वस्त्र, सोने-चांदी आदि के उपहार दान के रूप में बांटा करते थे। राज्य की जेलों में जिन कैदियों का आचरण अच्छा होता था, उन्हें नेक इनसान बनने की सीख दे, उन्हें उस दिन रिहा भी कर देते थे।

अनाथ बच्चों पर तो राजा की विशेष कृपा होती थी। उन्हें आशीर्वाद देते हुए वह उन्नति करने की सीख भी देते थे। प्रजा उनकी लंबी आयु और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करती। उनका जय-जयकार करती। राजा और प्रजा के मिलने का यह विशेष दिन होता था।

एक बार अपने जन्मदिन पर जब राजा लोगों को उपहार बांट रहे थे, तो एक गरीब-निर्धन बालक ने उपहार लेने से इनकार कर दिया। बोला–''क्षमा करें, महाराज! मुझे यह सब नहीं चाहिए। जिंदगी में ये चीजें थोड़े समय के लिए अवश्य मदद करती हैं, परंतु जिंदगी भर के लिए ये किसी काम की नहीं। इनका कोई मोल नहीं है। ये शीघ्र बेकार हो जाती हैं।''

राजा को बहुत बुरा लगा। उन्हें यह अपना घोर अपमान लगा। 'इस बालक की इतनी गुस्ताखी?' उन्हें बड़ा क्रोध आया और मन ही मन सोचने लगे–'आज तक कभी किसी ने मेरा इस तरह अपमान नहीं किया। इस बालक की इतनी हिम्मत कि इसने मेरे दिए उपहार को लेने से मना कर दिया! प्रजा के सामने मेरी हंसी उड़ाई। इसे तो दंड मिलना चाहिए।'

फिर दूसरे ही पल, राजा के मन में विचार कौंधा–'नहीं-नहीं, आज अपने जन्मदिन के शुभ अवसर पर तो मैं दान देता हूं। इसे दंड कैसे दे दूं! यह उचित नहीं होगा।'

यह सोचकर राजा का क्रोध एकाएक शांत हो गया। पर उनका विस्मय नहीं गया कि आखिर इस बालक ने दान लेने से इनकार क्यों किया है। राजा ने बालक से प्यार से पूछा–''इतनी गरीबी की हालत में भी तुमने उपहार लेने से इनकार क्यों किया? आखिर तुम्हें उपहार में क्या चाहिए?''

निडर बालक का बेबाक जवाब था–''महाराज, मुझे तो एक ऐसा स्थायी उपहार चाहिए, जिसे पाकर मेरा सारा जीवन संवर जाए। मैं अपना और समाज का कुछ भला कर सकूं।''

अचंभे में पड़कर राजा ने पूछा–''स्थायी उपहार, यानी...? तुम्हें कैसा स्थायी उपहार चाहिए?''

–''महाराज, विद्या ही एक स्थायी उपहार है। मुझे शिक्षा का उपहार चाहिए। मैं पढ़ना-लिखना चाहता हूं।'' बालक ने कहा।

यह सुनकर राजा दंग रह गए। उनकी आंखों में ममता के आंसू उमड़ पड़े। उन्होंने बालक को गले से लगाया और तुरंत आदेश दिया कि इस बालक की शिक्षा-दीक्षा का किसी अच्छी पाठशाला में प्रबंध किया जाए। यही नहीं, इसके साथ ही राजा ने अपने राज्य में अधिक से अधिक पाठशालाएं व शिक्षा-केंद्र खोलने का आदेश भी दिया, ताकि अनाथ बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जा सके।''

बाद में यही बालक कृष्णचंद्र आगे चलकर उस राज्य का मुख्य न्यायाधीश बना। ●

इस कहानी से मुझे शिक्षा मिलती है कि.....

.....

बीस रुपए के लिए

बस कंडक्टर चिल्लाया–"टिकट ले लो भई! और कोई है बगैर टिकट?"

"हां, इधर पीछे ढाई टिकट दे दो।"–रोहित के पापा ने पीछे से कहा।

कंडक्टर ने पीछे घूमकर देखा। बुरा-सा मुंह बनाते हुए वह अपनी सीट से उठा और धक्का-मुक्की करता हुआ बस के पीछे की सीटें तक जा पहुंचा। फिर चिढ़ते हुए बोला–"टिकट नहीं लिया? मैं कब से चिल्ला रहा हूं!"

रोहित के पिता जी ने कहा–"ढाई टिकट दे दो। एक तो बस में सवारी ठूंसकर भरी हैं। बीच में सवारियों का सामान भी है। कैसे लेता? वैसे भी सवारियों तक आपको आना चाहिए। सवारियां अपनी सीट छोड़कर आपकी सीट पर कैसे आएं टिकट लेने?"

कंडक्टर भन्ना गया। घूरते हुए बोला–"ढाई टिकट क्यों। इस बच्चे का पूरा टिकट नहीं लोगे? अरे बच्चे! तेरी उम्र क्या है?"

रोहित के पिता ने झट से जवाब दिया–"इसका नाम रोहित है और उम्र नौ साल है।"

कंडक्टर ने रोहित को गौर से देखा। फिर बोला–"इस बच्चे के मुंह में जुबान नहीं है क्या? कम से कम बच्चे के लिए झूठ तो मत बोलो। इस बच्चे की उम्र तो बारह साल से ज्यादा लग रही है। क्यों बच्चे, कितने साल के हो तुम?"

अब रोहित की मम्मी बोल पड़ी–"कहा न आपसे। हमारे रोहित की उम्र नौ साल है। हम भला क्यों झूठ बोलेंगे। हमारे ढाई ही टिकट बनते हैं। ये लो। ढाई टिकट के सौ रुपए।"

कंडक्टर ने गरदन झटकते हुए कहा–"क्या जमाना आ गया है। आधे टिकट का किराया बचाने के लिए झूठ पर झूठ बोला जा रहा है। चाहो, तो ये सौ रुपए भी रहने दो।"

रोहित के पिता जी गुस्से से बोले–"क्यों रहने दो। बच्चे का आधा टिकट लगता है। फिर हम क्यों पूरा टिकट लें?"

कंडक्टर तो जैसे बहस ही करना चाहता था–"कोई बात नहीं भाई साहब। तीन टिकट नहीं, आप ढाई ही लीजिए। लेकिन बीस रुपए के लिए कम से कम इस बच्चे को इतना छोटा तो न बनाइए। किसी से भी पूछ लीजिए। ये बारह साल से अधिक का बच्चा है। आप भी क्या उसे घर से सिखाकर लाए हैं कि चुप ही रहना। जबान न खोलना। देखो तो, कैसा चुप्पी साधे बैठा है! इसे बताना चाहिए कि इसकी उम्र क्या है।"

रोहित ने अपनी जेब से स्कूल का पहचान पत्र निकालते हुए अपनी मम्मी को दे दिया। उसकी मम्मी ने कहा–"ये लो। हमारे रोहित का पहचान पत्र। इसमें इसकी क्लास भी लिखी है और इसकी जन्मतिथि भी है।"

कंडक्टर ने रोहित का पहचान पत्र देखा और उस पर लगी रोहित की फोटो को भी गौर से देखा। फिर हिचकते हुए बोला–"इस कार्ड के हिसाब से तो रोहित नौ साल का ही है। लेकिन कद-काठी से यह काफी बड़ा दिखाई दे रहा है!"

तभी रोहित दोनों हाथों के इशारे से और अपने चेहरे के हाव-भाव से अपनी मम्मी को कुछ जताने की कोशिश करने लगा। रोहित की मम्मी ने कंडक्टर से कहा–"भाई साहब, रोहित आप से पूछ रहा है कि आपके कितने बच्चे हैं।"

रोहित ने हाथों के इशारे से फिर कुछ कहने की कोशिश की। अब रोहित के पापा ने कंडक्टर से कहा–"रोहित पूछ रहा है कि यदि कंडक्टर अंकल के बच्चों के सामने कंडक्टर अंकल को कोई झूठा कहे, तो आपको कैसा लगेगा।"

कंडक्टर बुरी तरह झेंप गया। रोहित के पापा बोले–"रोहित, हमारा इकलौता बच्चा है। यह मूक-बधिर है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि यह बोल नहीं सकता, तो कुछ समझता भी नहीं होगा। और हां, हम दोनों अच्छा कमा लेते हैं। कम से कम बीस रुपए के लिए हम अपने बच्चे के सामने झूठ नहीं बोलना चाहेंगे।"

पास की सीट पर बैठी एक नन्ही बच्ची बोल पड़ी–"कंडक्टर अंकल, आपने गलत बात की है। हम सब सुन रहे थे। आपको रोहित से और उसके मम्मी-पापा से भी माफी मांगनी चाहिए।"

कंडक्टर बगलें झांकने लगा। उसने एक पल की देरी भी नहीं की और माफी मांगकर अपनी सीट पर जाकर बैठ गया। ●

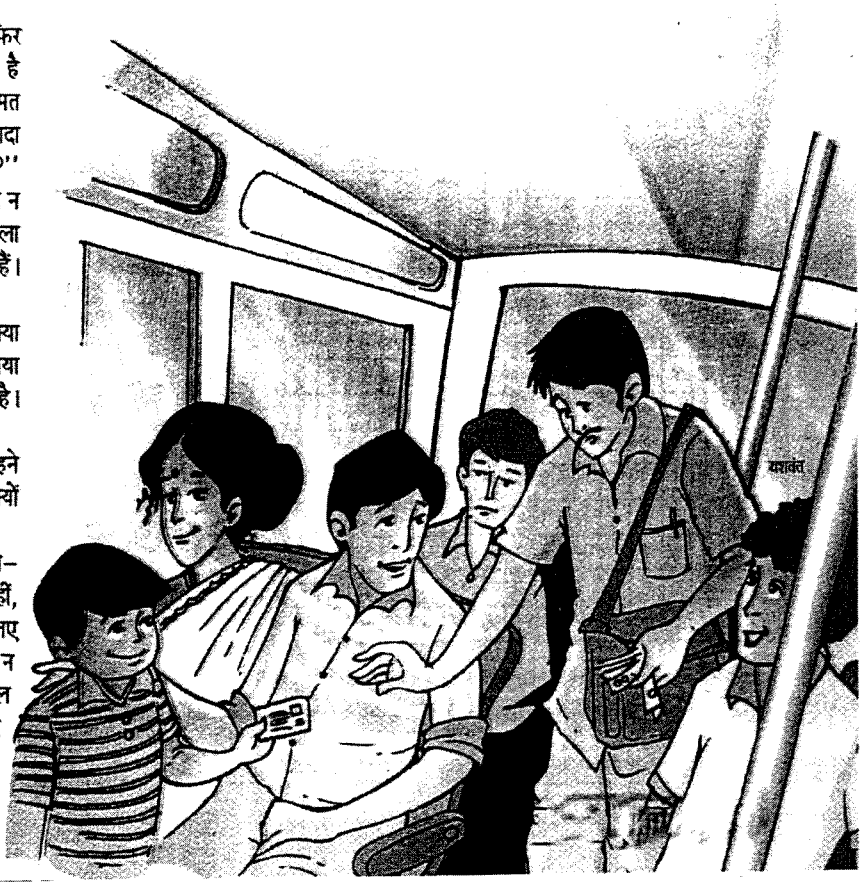

बेला

छोटी सी बेला को दादी मां ने बचपन में परियों की कहानी सुनाई थी। अब वह हर वक्त यही सोचती थी–'क्या मैं भी परियों के देश में जा सकती हूं?'

मां कहा करती थीं–''बेटी, परियां तो अपनी मर्जी से आती हैं।''

एक दिन बेला घूमने गई। वह चुपचाप परियों के बारे में सोचती जा रही थी। तभी आवाज आई–'मैं यहां, मैं यहां...!'

बेला को बड़ा अचंभा हुआ–'अरे, यह आवाज कहां से आ रही है?' वह कुछ और आगे गई, तो हंसती हुई एक सुंदर परी उसके आगे आकर खड़ी हो गई। उसके बालों में चांदी जैसे चम-चम चमकते फूल थे। बोली–''मैं हूं परी...श्वेत परी। तुम परियों के देश में जाना चाहती थीं न!''

बेला बड़ी खुश हुई। पर फिर उसे मां की चिंता हुई। बोली–''ज्यादा देर हुई, तो घर पर मां परेशान होंगी। तो बताओ परी, क्या हम शाम तक वापस आ सकते हैं?''

''हां-हां, क्यों नहीं!'' परी हंसी–''परी देश जाने में ज्यादा देर थोड़े ही लगती है। बस, सोचा और पहुंच गए!''

और फिर श्वेत परी ले गई बेला को परी देश में। इतना सुंदर था परीलोक कि बेला तो ठगी सी रह गई। वहां खूबसूरत पहाड़, झरने थे और सब ओर फूल ही फूल, मोती जैसे दमकते फूल। बेला उन फूलों को देख-देखकर हैरान थी। सोच रही थी–'अरे, कहीं ये मोतियों के गुच्छे तो नहीं?'

श्वेत परी ने हंसकर बताया–''नहीं बेला, ये फूल हैं। मोतियों जैसे उजले फूल, जो दूर से देखो, तो मोती से लगते हैं।''

बेला उन फूलों का एक बड़ा सा गुच्छा धरती पर भी लाई। और गांव में सबको फूल बांट दिए।

कुछ दिनों बाद मोहना गांव में सब ओर वे सुंदर-सुंदर फूल खिल उठे। और उसके साथ ही गांव में ही नहीं, दूर-दूर तक हरियाली और सुंदरता छा गई। और बेला तो जब से धरती पर आई थी, वह एकदम बदल ही गई। अब वह हरदम हंसती-गाती और मुसकराती ही रहती थी। लोग उसे 'धरती की परी' कहकर बुलाते।

कुछ समय बाद बेला अदृश्य हो गई। लोग कहते, वह इन सुंदर-सुंदर मुसकराते फूलों में ही समा गई है। तभी तो इन फूलों में हमें बेला की हंसी नजर आती है।

अब तो लोग मोहना गांव को कहने लगे–बेलापुर। और वे उजले फूल कहलाए बेला के फूल। उनकी खुशबू से धरती अब भी महक रही है।

इस कहानी से मुझे शिक्षा मिलती है कि.....

.....

.....

बीस रुपए के लिए

बस कंडक्टर चिल्लाया–''टिकट ले लो भई! और कोई है बगैर टिकट?''

''हां, इधर पीछे ढाई टिकट दे दो।''–रोहित के पापा ने पीछे से कहा।

कंडक्टर ने पीछे घूमकर देखा। बुरा-सा मुंह बनाते हुए वह अपनी सीट से उठा और धक्का-मुक्की करता हुआ बस के पीछे की सीटों तक जा पहुंचा। फिर चिढ़ते हुए बोला–''टिकट नहीं लिया? मैं कब से चिल्ला रहा हूं!''

रोहित के पिता जी ने कहा–''ढाई टिकट दे दो। एक तो बस में सवारी ठूंसकर भरी हैं। बीच में सवारियों का सामान भी है। कैसे लेता? वैसे भी सवारियों तक आपको आना चाहिए। सवारियां अपनी सीट छोड़कर आपकी सीट पर कैसे आएं टिकट लेने?''

कंडक्टर भन्ना गया। घूरते हुए बोला–''ढाई टिकट क्यों। इस बच्चे का पूरा टिकट नहीं लोगे? अरे बच्चे! तेरी उम्र क्या है?''

रोहित के पिता ने झट से जवाब दिया–''इसका नाम रोहित है और उम्र नौ साल है।''

कंडक्टर ने रोहित को गौर से देखा। फिर बोला–''इस बच्चे के मुंह में जुबान नहीं है क्या? कम से कम बच्चे के लिए झूठ तो मत बोलो। इस बच्चे की उम्र तो बारह साल से ज्यादा लग रही है। क्यों बच्चे, कितने साल के हो तुम?''

अब रोहित की मम्मी बोल पड़ीं–''कहा न आपसे। हमारे रोहित की उम्र नौ साल है। हम भला क्यों झूठ बोलेंगे। हमारे ढाई ही टिकट बनते हैं। ये लो। ढाई टिकट के सौ रुपए।''

कंडक्टर ने गरदन झटकते हुए कहा–''क्या जमाना आ गया है। आधे टिकट का किराया बचाने के लिए झूठ पर झूठ बोला जा रहा है। चाहो, तो ये सौ रुपए भी रहने दो।''

रोहित के पिता जी गुस्से से बोले–''क्यों रहने दो। बच्चे का आधा टिकट लगता है। फिर हम क्यों पूरा टिकट लें?''

कंडक्टर तो जैसे बहस ही करना चाहता था–''कोई बात नहीं भाई साहब। तीन टिकट नहीं, आप ढाई ही लीजिए। लेकिन बीस रुपए के लिए कम से कम इस बच्चे को इतना छोटा तो न बनाइए। किसी से भी पूछ लीजिए। ये बारह साल से अधिक का बच्चा है। आप भी क्या उसे घर से सिखाकर लाए हैं कि चुप ही रहना। जबान न खोलना। देखो तो, कैसा चुप्पी साधे बैठा है! इसे बताना चाहिए कि इसकी उम्र क्या है।''

रोहित ने अपनी जेब से स्कूल का पहचान पत्र निकालते हुए अपनी मम्मी को दे दिया। उसकी मम्मी ने कहा–''ये लो। हमारे रोहित का पहचान पत्र। इसमें इसकी क्लास भी लिखी है और इसकी जन्मतिथि भी है।''

कंडक्टर ने रोहित का पहचान पत्र देखा और उस पर लगी रोहित की फोटो को भी गौर से देखा। फिर हिचकते हुए बोला–''इस कार्ड के हिसाब से तो रोहित नौ साल का ही है। लेकिन कद-काठी से यह काफी बड़ा दिखाई दे रहा है!''

तभी रोहित दोनों हाथों के इशारे से और अपने चेहरे के हाव-भाव से अपनी मम्मी को कुछ जताने की कोशिश करने लगा। रोहित की मम्मी ने कंडक्टर से कहा–''भाई साहब, रोहित आप से पूछ रहा है कि आपके कितने बच्चे हैं।''

रोहित ने हाथों के इशारे से फिर कुछ कहने की कोशिश की। अब रोहित के पापा ने कंडक्टर से कहा–''रोहित पूछ रहा है कि यदि कंडक्टर अंकल के बच्चों के सामने कंडक्टर अंकल को कोई झूठा कहे, तो आपको कैसा लगेगा।''

कंडक्टर बुरी तरह झेंप गया। रोहित के पापा बोले–''रोहित, हमारा इकलौता बच्चा है। यह मूक-बधिर है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि यह बोल नहीं सकता, तो कुछ समझता भी नहीं होगा। और हां, हम दोनों अच्छा कमा लेते हैं। कम से कम बीस रुपए के लिए हम अपने बच्चे के सामने झूठ नहीं बोलना चाहेंगे।''

पास की सीट पर बैठी एक नन्ही बच्ची बोल पड़ी–''कंडक्टर अंकल, आपने गलत बात की है। हम सब सुन रहे थे। आपको रोहित से और उसके मम्मी-पापा से भी माफी मांगनी चाहिए।''

कंडक्टर बगलें झांकने लगा। उसने एक पल की देरी भी नहीं की और माफी मांगकर अपनी सीट पर जाकर बैठ गया।

इस कहानी से मुझे शिक्षा मिलती है कि.....

.....

तेनालीराम

पानी-पानी

बरसों बाद इतना पानी पड़ा था कि विजयनगर राज्य की छोटी-बड़ी सब नदियां उफान पर थीं और जगह-जगह बाढ़ आ गई थी।

राजा कृष्णदेव राय ने मंत्री से कहा–''तुम शीघ्र गांवों में जाकर बाढ़ पीड़ितों की मदद के काम में जुट जाओ। धन की परवाह मत करो।''

''ठीक है महाराज!''–कहकर मंत्री ने राजकोष से बहुत सा धन निकाल लिया।

कुछ दिन बाद मंत्री लौटकर आया। उसने बताया–''महाराज, मैंने सब प्रबंध कर दिया गया है। अब हर गांव में लोगों को राज्य की ओर से सहायता दे दी गई है। जगह-जगह राहत शिविर लगा दिए हैं। गांव वालों को पानी से निकालने के लिए नावों का प्रबंध कर दिया है। जहां जरूरी था, वहां पुल भी बनवाए गए हैं।''

सुनकर राजा मंत्री की तारीफ करने लगे। पर उन्होंने देखा, तेनालीराम कुछ बुदबुदा रहा है।

''अरे, तुम क्या कह रहे हो तेनालीराम?'' राजा कृष्णदेव राय ने अचरज से भरकर कहा।

तेनालीराम कुछ कहता, राजपुरोहित बोल उठा–''महाराज, लगता है, तेनालीराम कुछ जादू कर रहा है, जिससे जहां मंत्री जी न पहुंच पाए हों, वहां इसका जादू हो जाए।''

तेनालीराम बोला–'' महाराज, मंत्री जी ने तो सचमुच जादू कर दिया है! प्रजा इतनी खुश है कि रात-दिन दुआएं दे रही है।''

''अच्छा! फिर तो मुझे भी चलकर देखना चाहिए।''

राजा प्रसन्न होकर बोले।

अगले ही दिन राजा कृष्णदेव मंत्री, तेनालीराम व प्रमुख दरबारियों के साथ राजधानी के आसपास के गांवों में जा पहुंचे। वहां बचाव कार्य करने वालों के दो-एक शिविर लगे हुए थे। देखकर, राजा संतुष्ट हो गए। मंत्री का चेहरा चमक उठा। बोला–''अब आप थक गए होंगे महाराज। चलिए, अब वापस चलते हैं।''

राजा राजधानी की ओर चलने लगे, तभी तेनालीराम बोला–''महाराज, यहां तक आए हैं, तो थोड़ा आगे चलते हैं। इसके आगे का दृश्य देखकर तो आप हैरान रह जाएंगे।''

राजा आगे गए, तो कुछ और ही नजारा था। जगह-जगह बाढ़ का पानी और गंदगी नजर आ रही थी। लोग घरों की छतों व ऊंचे टीलों पर बैठकर जान की खैर मना रहे थे। सब ओर हाहाकार मचा था। प्रजा मदद के लिए गुहार लगा रही थी। पर कोई सहायता करने वाला नहीं था। नदियों पर पुल न होने के कारण लोग भागने की स्थिति में भी नहीं थे।

राजा के पूछने पर लोगों ने बताया–''यहां कोई बचाव कार्य नहीं हुआ।''

राजा ने क्रोध से मंत्री की ओर देखा। मंत्री के चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। वह थर-थर कांपने लगा। फिर हाथ जोड़कर बोला–''क्षमा करें महाराज, बाढ़ पीड़ितों की मदद का काम अभी चल [illegible] पूरा नहीं हुआ। जल्दी ही [illegible] सहायता के लिए सारा इंतजाम करवाता हूं।''

राजा बोले–''बाढ़ पीड़ितों की मदद का काम अब तेनालीराम संभालेगा। तुम राजकोष से निकाले गए धन का हिसाब तेनालीराम को दो।''

लौटते समय राजा बोले–''तेनालीराम, मगर तुम तो किसी जादू की बात कर रहे थे?''

''महाराज, अगर मैं ऐसा न कहता, तो आपकी आंखों के आगे यह सचाई कैसे आती?''

राजा ने मुसकराकर कहा–''तेनालीराम, इसीलिए तो मुझे तुम्हारी जरूरत है।''

इस कहानी से मुझे शिक्षा मिलती है कि...

....

कौए का क्रेच

सुंदर वन में सब पक्षी हिल-मिलकर रहते थे। मीठे-मीठे फल खाते थे और पास के तालाब से पानी पीकर प्यास बुझाते थे। सभी पक्षियों को हवा में कलाबाजियां करना बहुत अच्छा लगता था।

एक बार बारिश न होने से फसल सूख गई। सुंदर वन के पेड़ों पर भी फल नहीं लगे। भयंकर अकाल पड़ गया। ताल-तलैया का भी पानी सूख गया। पक्षियों के राजा मोर ने पक्षियों की एक सभा बुलाई। मंत्री तोते ने सुझाव दिया–''हम सब पक्षी अपने अंडे पेड़ पर छोड़कर, प्रतिदिन सुंदर वन से दूर उड़कर जाया करेंगे। दूर के वनों से फल खाकर और पानी पीकर शाम तक लौट आया करेंगे।''

कौए ने पूछा–''हमारे पीछे हमारे अंडों की रखवाली कौन करेगा? हमारे यहां न रहने पर अज्जू अजगर नाश्ते से लेकर डिनर तक हमारे अंडों का ही करेगा। पहले भी वह अंडों की चोरी करते रंगे हाथों पकड़ा गया है।'' इस पर मंत्री तोते ने रास्ता निकाला। उसने कहा–''कौआ यहां रुककर सबके अंडों की चौकीदारी करेगा। हम सब लौटते हुए अपने पंजों में उसके लिए फल और चोंच में पानी ले आया करेंगे।''

कौए ने 'कांव-कांव' करके अंडों की रखवाली करने की बात मान ली। कहा–''ठीक है। मेरी तबीयत भी ठीक नहीं रहती है। मैं यहां रुककर अंडों की ठीक से देख-भाल कर सकता हूं। आप सब मेरा दाना-पानी ले आया करें।''

सुंदर वन के पक्षी कौए के क्रेच में अपने-अपने अंडे छोड़कर जाने लगे। कौआ पक्षियों के जाते ही अपने अंडों को परों के नीचे छिपाकर तुरंत सो जाता। अज्जू अजगर मौका देखकर तुरंत निकलकर आता और दो-चार अंडे कम कर देता। पक्षी लौटकर कौए को दाना-पानी देते और अपने अंडे मांगते। कभी चिड़िया के अंडे कम निकलते, तो कभी बुलबुल के। पक्षी कौए से अंडों के कम होने की बात करते, तो कौआ झल्लाते हुए उत्तर देता–''मैं कहां तक ध्यान रखूं? तोते के अंडे देखता हूं, तो पीछे से मोर के अंडे कम हो जाते हैं। बुलबुल के अंडों पर निगाह रखता हूं, तो इधर से कबूतर के अंडे कम हो जाते हैं। अकेला कहां-कहां की चौकीदारी करूं!''

पर नींद आने की बात कौआ किसी को भूलकर भी नहीं बताता था। कोयल के अंडे कौए जैसे ही थे। उसके अंडे कभी कम नहीं होते थे, क्योंकि मूर्ख कौआ कोयल के अंडों को भी अपने अंडे समझकर, अपने परों के नीचे छिपाकर सोता था।

कुछ दिनों के बाद सुंदर वन में भी गहरे बादल छा गए, बारिश हो गई। अकाल समाप्त हो गया। ताल-तलैया में थोड़ा-थोड़ा पानी जमा होने लगा। अब सुंदर वन के पक्षियों ने दूसरे वनों में जाना बंद कर दिया और अपने अंडे कौए के क्रेच से ले लिए।

परंतु सुंदर वन की कोयल की दोस्ती इंदु वन की कोयल से हो गई थी। दोनों ऊंची उड़ान पर निकल जातीं। इसलिए कोयल अपने अंडे कौए के क्रेच से लाई ही नहीं। कौआ अपने परों के नीचे कोयल के अंडों को भी सेता रहा। तब से आज तक कौआ कोयल के अंडों को भी सेता आ रहा है। ●

इस कहानी से मुझे शिक्षा मिलती है कि.....

.....

होनहार गधा

वनराज शेर सिंह के महल में उस दिन बच्चे चहक रहे थे। महाराज ने जंगल और आसपास के गांवों से होनहार बच्चों को इनाम देने के लिए बुलाया था। बच्चों से मिलकर महाराज भी बेहद खुश थे। उन्हें अपना बचपन याद आ गया था। वह लाल-लाल आंखें दिखाना और गुर्राना भूलकर बच्चों के साथ हंसी-मजाक कर रहे थे। ज्ञानपुर गांव का गोलू गधा भी बच्चों में शामिल था।

उधर दरबार में बच्चों को इनाम देने की तैयारी चल रही थी। दरबार सज गया। वनराज सिंहासन पर बैठ गए। सिंहासन के ठीक सामने होनहार बच्चों को बैठाया गया था।

''देख भाई, देख! होनहार बच्चों के साथ एक गधा भी बैठा है। वह क्या कमाल करके आया है?''–बंटू सियार ने गधे का मजाक उड़ाते हुए अपने दोस्त बैडी लोमड़ से कहा।

''हां रे, बैठा तो है! कोई गधा कैसे होनहार हो सकता है? बैठे रहने दो। अच्छा इनाम तो अपने बच्चों को ही मिलेगा।''–बैडी बोला।

''ठीक कह रहे हो। मेरा बेटा टंटू बहुत अच्छा चित्रकार है। उसने अपने चित्र में दिखाया है कि मैं वनराज को पुष्प हार पहना रहा हूं। महाराज खुश हो गए होंगे। उसके चित्र को वह जरूर पहला इनाम देंगे।''–बंटू सियार ने अपने बेटे की तारीफ करते हुए कहा।

उन दोनों की बातचीत कालू सूअर सुन रहा था। वह अपने पास बैठे मोटू भालू से बोला–''वन महोत्सव में मेरे और तुम्हारे बच्चे नाम करेंगे। सियार और लोमड़ सपने ही देखते रह जाएंगे। मेरे बेटे ने वन के विनाश का भयावह रूप दिखाया है, अपने चित्र में। उसे प्रथम पुरस्कार तो मिल ही सकता है।''

''मेरे बेटे ने तो अपने चित्र में खुद को महाराज के पांव छूते दिखाया है। इससे महाराज बेहद खुश हो गए होंगे।''–मोटू भालू ने कहा।

''दरबार में आप सभी का स्वागत है। वनमहोत्सव के दौरान मैंने मंगलवन और आसपास के गांवों में बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं रखी थीं। बच्चों ने चित्रकला, भाषण, निबंध लेखन, नृत्य, गायन, वादन के जरिए वन के विकास, पौधे लगाने, पेड़ न काटने और जानवरों का शिकार न करने तथा खुशहाली का संदेश दिया है।''–वनराज ने कहा।

दरबार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। कुछ जानवरों ने महाराज का जयकार भी किया। वनराज बोले–''मैंने एक विशेष प्रतियोगिता कराई थी। जानवर अपनी सेहत के प्रति बेहद लापरवाह हैं। बीमार होने पर डाक्टर के पास नहीं जाते, बल्कि ओझा से झाड़-फूंक कराते हैं। इससे कई जानवरों की जान भी जा चुकी है। कई बच्चों ने अपने चित्रों के जरिए विभिन्न घातक बीमारियों को दिखाया है। उन सभी बच्चों को इनाम मिलेगा, लेकिन प्रथम पुरस्कार मिलेगा ज्ञानपुर के गोलू गधे को।''

यह सुनकार सभी जानवर गोलू को देखने लगे। जितने मुंह, उतनी बातें होने लगीं। शोर-शराबा सुनकर महाराज दहाड़ उठे–''आप लोग शांति बनाए रखें और मेरी बातें ध्यान से सुनें।''

दरबार में शांति छा गई। इसके बाद महाराज ने गोलू गधे को मंच पर बुलाया। उसने मंच पर जाकर सभी का अभिवादन किया।

कुछ जानवरों ने उसका मजाक उड़ाया, तो कुछ ने उसके सम्मान में तालियां बजाईं।

महाराज ने गोलू का परिचय देते हुए कहा–''गोलू ज्ञानपुर गांव का है। इस गांव में गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा और गधों के कई बच्चों ने जानलेवा बीमारियों पर आधारित प्रतियोगिता में भाग लिया। मैं गांव से लौट रहा था, तो देखा कि गोलू कुछ जानवरों का इलाज करवाने अस्पताल ले जा रहा था। गोलू, आगे तुम बताओ।''

गोलू गधे ने माइक संभाला और बताया–''मुझे भी चित्रकारी आती है। जब प्रतियोगिता का पता चला, तो मैंने सोचा कि बीमारियों के संबंध में चित्र बनाने से अच्छा होगा कि बीमार जानवरों के इलाज का शिविर लगवा दिया जाए। मैंने डाक्टर कालू हाथी से बात की, तो वह शिविर में सेवा देने के लिए तैयार हो गए। उनका साथ कई अन्य चिकित्सकों ने भी दिया। इस तरह कई रोगियों की जान बच गई।''

यह सुनकर दरबार तालियों से गूंज उठा। चारों तरफ गोलू गधे की तारीफ होने लगी। अपने बच्चों की तारीफ करने वाले बैडी, बंटू, मोटू और कालू चकित रह गए।

इसके बाद महाराज ने गोलू को प्रथम पुरस्कार स्वरूप सोने के कई सिक्के दिए। इसके अलावा उन्होंने ढेर सारे खिलौने और कई अन्य चीजें दीं।

अन्य बच्चों को भी महाराज ने इनाम दिया। साथ ही उनका खूब उत्साहवर्धन भी किया। कार्यक्रम खत्म होने के बाद महाराज ने प्रधानमंत्री गजराज से कहा–''गोलू को सम्मान के साथ इसके घर भिजवाइए। अकेला जाएगा, तो कोई इसके सिक्के छीन लेगा।''

गोलू गाड़ी से अपने गांव पहुंचा। सभी ने उसकी तारीफ करते हुए उसे शाबाशी दी। तमाम बच्चे, गोलू गधे जैसा कार्य करने के लिए प्रेरित हुए।•

इस कहानी से मुझे शिक्षा मिलती है कि.....

.....